कैम्पस कनेक्ट
(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु का समाचार बुलेटिन)
दिसम्बर, 2025 वर्ष : 1, अंक : 5

प्रेरणा–स्रोत :
श्रीमती आनन्दीबेन पटेल
माननीया कुलाधिपति एवं
श्री राज्यपाल, उ. प्र.

श्रीमान योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमन्त्री, उ. प्र.

संरक्षक :
प्रो. कविता शाह
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

परामर्श–मण्डल :
प्रो. दीपक बाबू
प्रो. सौरभ
प्रो. प्रकृति राय
प्रो. नीता यादव
डॉ. अश्विनी कुमार (कुलसचिव)
श्री दीनानाथ यादव (परीक्षा नियंत्रक)

सम्पादक :
प्रो. हरीशकुमार शर्मा

सह–सम्पादक :
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक–मण्डल :
डॉ. शिवम शुक्ल
डॉ. रेनू त्रिपाठी
डॉ. सत्यम मिश्र

वित्त–प्रबन्धन
श्री रमेन्द्र कुमार मौर्य (वित्ताधिकारी)

तकनीकी सहयोग एव डिजाइनिंग :
श्री दिव्यांशु कुमार

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक :
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश–272202
ईमेल :
campus.connect@suksn.edu.in
वेबसाइट : www.suksn.edu.in

(सम्पादन–प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

नोट : रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

कुलपति–कथन

बीता नवम्बर माह हमारे विश्वविद्यालय के लिये काफी गहमागहमी से भरा, परन्तु सार्थक और आनन्दमय रहा। हमने अपने विश्वविद्यालय का नवाँ दीक्षान्त समारोह आयोजित किया। इस अवसर पर हमें मा. कुलाधिपति महोदया श्रीमती आनन्दीबेन पटेल जी, भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसन्धान संस्थान, मोहाली के निदेशक प्रो. अनिल कुमार त्रिपाठी जी, प्रदेश की शिक्षा राज्यमन्त्री माननीया श्रीमती रजनी तिवारी जी सहित बहुत से अति विशिष्ट एवं गणमान्य जनों की मेजबानी करने का सुखद अवसर प्राप्त हुआ। माननीया कुलाधिपति जी का दो दिन का विश्वविद्यालय में प्रवास हमारे लिये एक अविस्मरणीय अनुभव रहा। हमने उनसे एक अभिभावक की तरह काफी कुछ सीखा, जाना, समझा जो विश्वविद्यालय की गतिशीलता बढ़ाने में बहुत उपादेय सिद्ध होगा और हमारी आगे की यात्रा को सुगम तथा सार्थक करेगा।

दिसम्बर माह आते ही वर्ष की विदाई की मानसिक तैयारी सी होने लगी है। नये का स्वागत और पुराने की विदाई– अनन्तकाल से यही होता चला आ रहा है। सृष्टि की निरन्तरता का यही आधार है। जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' में लिखते हैं–
प्रकृति के यौवन का शृंगार, करेंगे कभी न बासी फूल।
मिलेंगे वे जाकर अति शीघ्र, आह! उत्सुक है उनकी धूल।।

प्रकृति नित्य नवीन है, सृष्टि नित्य नवीन है और जीवन भी नित्य नवीन है। जीवन का उत्साह भी नित्य नवता धारण किये हुए है। यद्यपि जीवन सतत संघर्षमय भी है, फिर भी मानव की जिजीविषा है कि वह उससे जूझता है, उसे अपने अनुकूल बनाता है और उसमें प्रसन्नता खोजता है। संसार को दुःखमय कहा गया है, पर इसी में सुख भी तो है! सो, आनन्द की खोज जैसे यहाँ जीवन का ध्येय है। भारी–भारी कष्ट उठाकर सब यहाँ आनन्द ही तो खोजने में लगे हैं। आनन्द के सबके अपने भिन्न अर्थ और ध्येय हो सकते हैं। सबको मनोवांछित रूप में यह प्राप्त भी नहीं हो जाता। योगी और भोगी के आनन्द की अलग–अलग परिभाषाएं हो सकती हैं, होती ही हैं; पर लक्ष्य तो सबका एक ही है– आनन्द–प्राप्ति! यह अलग बात है कि कोई दूसरों को सताकर आनन्द पाता है तो कोई कष्ट–निवारण हेतु दूसरों की सहायता करके। किसी का आनन्द प्राप्त करने में निहित है तो किसी का प्रदान करने में। आनन्द भोग में भी है और त्याग में भी। किसको किसमें वह प्राप्त होता है, यह अपनी–अपनी वृत्ति और प्रवृत्ति पर निर्भर करता है; पर एक बात तो तय है कि भोग का सुख तात्कालिक है और त्याग का दीर्घकालिक। बड़े त्याग तो कदाचित् सभी के लिये सम्भव नहीं, पर छोटे–छोटे त्याग तो अवसर आने पर किये ही जा सकते हैं। अपने सुख से तो सभी सुखी होते ही हैं, यदि दूसरों के सुख से भी सब सुखी होना सीख लें तो शायद संसार की बहुत सी समस्याएं हल हो जायें। इस सन्दर्भ में फिर प्रसाद जी ही याद आ रहे हैं–
औरों को हँसते देखो मनु, हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो, जग को सुखी बनाओ।।

बीता कल यदि कुछ सार्थक दे जाता है तो वह यादगार बन जाता है। आने वाले कल से कुछ शुभ परिणाम की अपेक्षा होती है तो वह हमारा उत्साह और बढ़ा देता है। तो आइए, व्यतीत से सीखें और सोल्लास शुभागत की ओर पग बढ़ायें। विगत का अफसोस नहीं और आगत से अतिशय अपेक्षा नहीं, यह सहज रहने का सूत्र है। अतः नये का स्वागत करें, पुराने को विदाई दें, मगर सहजतापूर्वक।हमारे भीतर के आनन्द का सोता ऐसा बहे कि वह बाहर निकलकर हमारे साथ–साथ दूसरों को भी आनन्द से आप्लावित कर सके तो कुछ बात ही और होगी। आप सभी को जाते हुए वर्ष की बधाई और आने वाले वर्ष के लिये बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

–कविता शाह

विश्वविद्यालय कुलगीत

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।
बुद्ध की करुणा, अहिंसा, प्रेम का उपहार,
उमड़ता रहता अहर्निश शान्ति–पारावार,
ज्ञान का आलोक, मानव का परम सन्देश,
नित्य प्रज्ञा–प्रीति, गुरुओं का नवल निवेश।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

परम पावन, परम निर्मल, पुण्य भूमि प्रकाश,
ज्ञान का, आनन्द का, आलोक का आकाश,
महा करुणा से अलंकृत कपिलवस्तु महान,
अमरता की चिर तृषा का लोक मंगल गान।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

नमन इसको इस धरा को कोटि कोटि प्रणाम,
यह नहीं बस एक संस्था, तीर्थ अमृत धाम,
महाप्रज्ञा, महाकरुणा, शान्ति का सन्देश,
विश्वगुरु का यह तपोमय, ज्ञान का परिवेश।

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।

वर्ष नव आ रहा

वर्ष नव आ रहा फिर से, नये सपने सँजोयें हम।
विगत कटु अनुभवों का पंक, निर्मल मन से धोयें हम।
हमारी प्रार्थना प्रभु से, हमें वे शक्ति ऐसी दें–
कि हों विश्वास से पूरित, न अपनी आशा खोयें हम।

स्वागतम

स्वागतम, है स्वागतम्, हे स्वागतम्!
बुद्ध की इस पुण्य–भू पर स्वागतम्!
धरा यह बुद्ध की अज्ञान–तम अवरुद्ध करती।
ज्ञान–आलोक में स्नात कर मन शुद्ध करती।
चली आयी प्रथा यह सैकड़ों वर्षों से अविरत,
बुद्ध–उपदेसना उर भाव–शुभ उद्बुद्ध करती।
गूँजता 'अत्त दीपो भव' मन्त्र अभिरामतम!

नया अब वर्ष देखो आ रहा है विश्व–भर में।
कुमुद उल्लास के खिलने लगे मन–मानसर में,
विगत है जा रहा, होती तैयारी नवागत की,
नयी आशा सँजोये, बढ़ रहे नववर्ष–घर में।
भरी यह चाह, आगे हो सुपथ नव भव्यतम!

नया जो है अभी, उसको पुराना होना पड़ता है।
धरा पर जो भी आया है, उसे जाना ही पड़ता है।
दुःखमय है जगत, आनन्द भी इसमें नही कुछ कम;
गुजरकर दोनों से ही जग में जीवन जीना पड़ता है।
है सम्यक् बुद्धि करती मार्ग सबका सहजतम!

चले आओ यहाँ, यह ज्ञान की धरती परम पावन।
बढ़े आओ यहाँ, यह दान की है भूमि मनभावन।
यहाँ से सीख फैली है जगत में करुणा, मुदिता की,
मैत्री, आत्मसंयम, त्याग, तप का भाव भरता मन।
यहाँ रहता सतत आभास होता दिव्यतम!

–पराया

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय का नवम् दीक्षांत समारोह भव्यतापूर्वक सम्पन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के नवम दीक्षांत समारोह के अवसर पर उपस्थित छात्र–छात्राओं, शिक्षकों, अभिभावकों को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय की कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने उपाधि एवं मेडल प्राप्त करने में छात्राओं की संख्या अत्यधिक होने पर एक तरफ उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की, वहीं दूसरी तरफ लड़कों को भी प्रेरित किया कि वह भी इस प्रतियोगिता में आगे बढ़ें। सभी मिलकर राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान दें।एक से अधिक गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाली छात्राओं के अभिभावकों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि माता–पिता की प्रेरणा और सत्कर्म से आज बच्चे आगे बढ़ रहे हैं। विशेष रूप से माता के परिश्रम से लड़कियाँ निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। उन्होंने कहा उत्तर प्रदेश के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता अत्यधिक बढ़ी है। उन्होंने कठिन परिश्रम के उपरांत छात्र–छात्राओं द्वारा अच्छा प्रदर्शन कर सम्मान एवं उपाधि प्राप्त करने के लिये बहुत बधाई दी।उन्होंने मेडल प्राप्त होने से वंचित रह जाने वाले विद्यार्थियों का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि निरंतर प्रयास जीवन में चलता रहना चाहिए। कुछ अंक कम प्राप्त होने से,एक समय पर पीछे हो जाने से हार नहीं होती है।

अपने दीक्षांत भाषण में राज्यपाल ने विश्वविद्यालय की प्रगति–आख्या का उल्लेख करते हुए हर्ष व्यक्त किया और कहा कि विश्वविद्यालय शोध, नवाचार एवं समाज के सर्वाधिक हित के लिए सदैव ही सजग है। उन्होंने विश्वविद्यालय के नवम दीक्षांत समारोह के अवसर पर स्वर्ण पदक विजेताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह परिणाम महिला सशक्तीकरण को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि आज की नारी ने प्रत्येक क्षेत्र में यह साबित किया है कि नारी–शक्ति बल, उत्साह एवं विजय का प्रतीक है। महोदया ने विश्वविद्यालय द्वारा अर्जित की गयी 'क्यू एस आई गेज' की अंतराष्ट्रीय स्तर की गोल्ड रैंकिंग पर कुलपति एवं समस्त शिक्षकों को बधाई दी और कहा कि यह रैंकिंग विश्वविद्यालय की गुणवत्तापरक शिक्षा, नवाचार एवं प्रगति का प्रतीक है।

उन्होंने इस सत्र के परिणामो के बारे में प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आगे कहा कि विश्वविद्यालय में निरन्तर ही विदेशी छात्रों की संख्या में न केवल वृद्धि हो रही है, अपितु विदेशी छात्र उत्कृष्ट प्रदर्शन भी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय को विदेशी विश्वविद्यालय के साथ अनुबंध कर शोध, नवाचार को नए आयाम देने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि गाँव देश की आत्मा हैं, इसलिए शिक्षकों को परिक्षेत्र के गाँवों के साथ नियमित रूप से संपर्क स्थापित करके किसानों, वृद्ध महिलाओं, गर्भवती महिलाओं, नवजात शिशुओं के लिए उनकी परेशानियों से अवगत होकर ज्यादा से ज्यादा नवाचार को बढ़ावा देना चाहिए। विश्वविद्यालय को ग्रामीणों को प्राथमिक चिकित्सा की सामग्री वितरित करना चाहिए एवं ग्रामीण क्षेत्रों में 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अन्तर्गत वृक्षारोपण कराना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय को छात्रों को शैक्षणिक भ्रमण के लिए ले जाना चाहिए। इससे न केवल संवाद–कौशल, सहयोग और समूह में काम करने की क्षमता में वृद्धि होती है, अपितु नए स्थानों पर जाने और विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने से विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास विकसित होता है।

महोदया ने प्रधानमंत्री के नवीन अभियान 'स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार' का जिक्र करते हुए कहा कि यह अभियान समाज में महिलाओं के स्वास्थ्य, पोषण, जागरूकता और सम्मान को बढ़ावा देने हेतु चलाया जा रहा है जिसका मूल उद्देश्य है कि जब घर की नारी स्वस्थ होगी, तभी परिवार, समाज और राष्ट्र मजबूत बनेंगे। इसी क्रम में उन्होंने आगे कहा कि इस अभियान के अंतर्गत सभी लोग अपने घर में किशोरी बालिकाओं और महिलाओं में हीमोग्लोबिन (Hb) जाँच एवं एनीमिया की स्क्रीनिंग अवश्य कराये, साथ ही स्तन–स्वास्थ्य की सुरक्षा हेतु क्लीनिकल ब्रेस्ट एग्जामिनेशन भी करवाएं। उन्होंने कहा कि राष्ट्र गीत 'वन्देमातरम' के १०० वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर शिक्षण संस्थानों में नए–नए कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए।

दीक्षांत समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसन्धान संस्थान, मोहाली के निदेशक प्रो अनिल कुमार त्रिपाठी ने कहा कि आज के दीक्षांत समारोह में मेडल अर्जित करने वाले छात्र–छात्राओं ने चुनौतियों को अवसर में बदलकर अपनी दक्षता एवं सक्षमता को प्रदर्शित किया है। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि वर्तमान में पुरानी विधाओं की महत्ता कम हो रही है, इसीलिए छात्रों को सतत शिक्षा के माध्यम से नयी विधाओं में स्वयं को सशक्त एवं दृढबनाना चाहिए जिससे कि आने वाली चुनौतियों का आसानी से सामना किया जा सके।

उन्होंने कहा कि आज के समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता मशीनों को शिक्षा, उद्योग, स्वास्थ्य, विज्ञान, कृषि, यातायात, सुरक्षा आदि हर क्षेत्र में मनुष्यों की तरह सीखने, सोचने और निर्णय लेने में सक्षम बना रही है। छात्रों को कड़ी मेहनत, ईमानदारी एवं लगन से ज्ञान–विज्ञान के प्रवाह को अंगीकृत करके लक्ष्य प्राप्ति के लिए अग्रसर होना चाहिए। उन्होंने नेल्सन मंडेला, बिल गेट्स,

पं. मदन मोहन मालवीय, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आदि का नाम लेते हुए कहा कि ऐसे लोगों के जीवन से यह प्रेरणा मिलती है कि जीवन में संघर्षों से जीतकर ही सफलता की सीढ़ी चढ़ी जा सकती है।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित उत्तर प्रदेश की शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती रजनी तिवारी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि दीक्षांत समारोह शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत बहुत ही मूल्यवाची समारोह होता है। अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद युवा राष्ट्र जीवन में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के साथ जीवन–पथ पर अग्रसर होंगे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत अब एक जिम्मेदार नागरिक की तरह से विद्यार्थियों, युवाओं को अपना आचरण–व्यवहार करना चाहिए। प्रकृति के संरक्षण में युवाओं की महती भूमिका हो सकती है। सरकार की अनेक योजनाएं हैं, जो विद्यार्थियों को आत्मनिर्भरता की ओर निरंतर अग्रसर कर रही हैं। अपने उन्नयन के लिये उन्हें उनका लाभ उठाना चाहिए।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के नवम दीक्षांत समारोह के अवसर पर अपने स्वागत–उद्बोधन का प्रारंभ करते हुए कहा कि कुलाधिपति जी का मार्गदर्शन विश्वविद्यालय को निरन्तर ऊर्जा प्रदान कर रहा है। राजभवन के प्रयास से भी विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में निरंतर वृद्धि हुई है और शिक्षण संस्थानों में एक सकारात्मक और कौशलयुक्त शिक्षा का वातावरण सृजित हुआ है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल के मार्गदर्शन में उच्च शिक्षा के नित्य नए लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होगा। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय नैक मूल्यांकन हेतु अग्रसर है। विश्वविद्यालय विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति के पथ पर निरंतर आगे बढ़ रहा है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय ने भारत ही नहीं, वैश्विक पटल पर क्यू एस आई गेज के अंतर्गत गोल्ड रैंकिंग अर्जित की है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप शिक्षण और शोध कार्य दोनों दिशाओं में मूल्यपरक

सुधार हेतु सदैव विश्वविद्यालय कृत–संकल्प है।

कुलपति ने अपने संबोधन में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसन्धान संस्थान मोहाली के निदेशक प्रो. अनिल कुमार त्रिपाठी के बारे में कहा कि एरोमा मिशन की शुरुआत करने वाले एवं बैक्टीरियल जीनोमिक्स, प्लांट–माइक्रोबियल इंटरैक्शन, सिंथेटिक बायोलॉजी के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान देने वाले प्रो. त्रिपाठी एक सरल व्यक्ति और मर्मज्ञ शोध अध्येता हैं। आपका व्यक्तित्व एवं शैक्षिक जगत में आपकी पहचान विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा प्रदान करेगी।

इस अवसर पर कुलपति ने विश्वविद्यालय की संक्षिप्त प्रगति आख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में इस बार 37 कुलाधिपति पदक के अतिरिक्त समाज द्वारा अपने परिजनों के नाम पर 11 गोल्ड मेडल और प्रदान किये गये हैं। सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को 2 से 3 मेडल प्राप्त हुए हैं। उन्होंने आगे कहा कि एनएसएस और एनसीसी के माध्यम से निकटवर्ती गाँव में सामाजिक जागरूकता के साथ–साथ प्राथमिक चिकित्सा के माध्यम से स्वास्थ्य जागरूकता का भी कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में चंदन वाटिका एवं पदुमा सरोवर को भी विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय में विज्ञान संकाय में केंद्रीय उपकरण प्रयोगशाला स्थापित की जा चुकी है जिससे विश्वविद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों को सहूलियत मिलेगी तथा अनुसन्धान एवं नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।

उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर में छात्रों, कर्मचारियों एवं शिक्षकों के लिए ओपन जिम स्थपित किया गया है। सिद्धार्थोत्सव, एलुमनाई मीट, इंडस्ट्री–अकादमिक सम्मेलन, नयी तकनीकी से लैस आधुनिक लाइब्रेरी आदि माध्यमों से विश्वविद्यालय अनेक नवाचारों को बढ़ावा देने की दिशा में अग्रसर है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में कला संकाय में संगीत, नृत्य, पेंटिंग केंद्र इस वर्ष से संचालित हो चुके है। विश्वविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट के साथ–साथ कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने आगामी योजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय नैक मूल्यांकन की तैयारियों के लिए तत्पर है।

इससे पूर्व कुलाधिपति ने अपनी–अपनी कक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 48 स्वर्ण पदक प्रदान किये। इस अवसर पर 32 सफल पीएच.डी. शोधार्थियों को भी उपाधि प्रदान की गई। इस अवसर पर 53,986 स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण होने वाले छात्र–छात्राओं को उपाधि प्राप्त हुई। डिजी लॉकर पर 53,986 अंकपत्रों को भी अपलोड किया गया। इसी क्रम में कुलपति ने राज्यपाल को पुष्पगुच्छ देकर उनका अभिनन्दन किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने मुख्यद्वार पर स्थापित बौद्ध प्रतिमा, ओपन जिम, डिजिटल तथा चन्दन वाटिका एवं पदुमा सरोवर का लोकार्पण भी किया।

दीक्षांत कार्यक्रम में राजपाल,मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं कुलपति के कर–कमलों से 'उत्कर्ष'(दीक्षांत स्मारिका एवं वार्षिक प्रतिवेदन), 'कैम्पस कनेक्ट' (मासिक समाचार बुलेटिन) के नवम्बर अंक, सिद्धार्थोत्सव (चित्र–संचयन), योग विरासत(सम्पादित पुस्तक) का विमोचन भी किया गया।

दीक्षांत समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय के आसपास के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों नेहा, सरिता कुमारी, रागिनी विश्वकर्मा,

लक्ष्मी गुप्ता, बालसुधा, किंजल भारती ने पर्यावरण संरक्षण पर आधारित एक कविता का वाचन किया, जिसके बाद छात्रों को राज्यपाल के करकमलो से प्रमाणपत्र वितरित किये गये। इस क्रम में विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गाँवों में आयोजित प्रतियोगिताओं में विजयी प्राथमिक विद्यालय, कपिलवस्तु की कक्षा तीन की छात्रा दुर्गावती को चित्रकला प्रतियोगिता में, प्राथमिक विद्यालय, अलीगढ़वा की कक्षा पाँच की छात्रा नंदिनी कसौधन को कहानी कथन प्रतियोगिता में प्रथम एवं रिद्धि कसौधन को भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने की लिए प्रमाण पत्र वितरित किये गए।

भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली पूर्व माद्यमिक विद्यालय की कक्षा आठ की छात्रा साधना ने 'विकसित भारत' विषय पर राज्यपाल के समक्ष अपना भाषण प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कार्य परिषद एवं विद्या परिषद के सदस्यगण, सांसद श्री जगदम्बिका पाल, नेता विपक्ष श्री माता प्रसाद पांडेय, विधायक श्री श्याम धनी राही, विधायक श्री विनय वर्मा, पूर्व कुलसचिव डॉ. अमरेंद्र कुमार सिंह, प्रो. अरविंद सिंह, प्रो.

बृजेश त्रिपाठी, डॉ. सन्तोष सिंह, प्रो. विजय राय सहित जनप्रतिनिधिगण, महाविद्यालयों के प्राचार्य, शिक्षक, विद्यार्थी, कर्मचारी तथा गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मेधावियों को प्रदान किये गए मेडल

विश्वविद्यालय में नवम दीक्षांत के अवसर पर पुष्पलता यादव को बी. ए., अर्पित वर्मा को बी. कॉम., जोबरिया जरीन को बी.एससी., ज्योति पासवान को बी.एससी. गृह विज्ञान, हर्षित यादव को बी.एससी. कृषि, अर्पित सिंह को बी.बी. ए. आयशा खातून को बी.सी.ए., भार्गव मणि त्रिपाठी तिवारी को एल.एल.बी, आशीष अधिकारी को एम.ए. प्राचीन इतिहास, शांभवी पाठक को एम.ए. अर्थशास्त्र, रागिनी राय को एम.ए. शिक्षा शास्त्र, आयुष श्रीवास्तव को एम.ए. अंग्रेजी, किरणबाला को एम. ए. भूगोल, सलमा खातून को एम. ए. गृह विज्ञान,

रोशनी जायसवाल को एम. ए. मनोविज्ञान, शिवम पटेल को एम. ए. इतिहास, निक्कू गुप्ता को एम. ए. राजनीतिशास्त्र, प्रिया अग्रहरि को एम. ए. संस्कृत, शशि त्रिपाठी को एम. ए. हिंदी, तस्लीम अंजुम को एम. ए. उर्दू, दीपशिखा अग्रहरि को एम. ए. लोक प्रशासन, वैष्णवी त्रिपाठी को एम. ए. समाजशास्त्र, साक्षी त्रिपाठी को एम. कॉम., मोहम्मद अयान अली को एम. एससी. बायोटेक्नोलॉजी, आराधना वर्मा को एम. एससी. वनस्पति विज्ञान, ललिता यादव को एम. एससी. रसायन विज्ञान, सची मिश्रा को एम. एससी.गणित, अनामिका त्रिपाठी को एम.एससी. जंतु विज्ञान, अंशी देवी को

एम.ए. /एम. एससी. रक्षा एवं रणनीति अध्ययन, दीपाली को एम.एससी. भौतिक विज्ञान, आकाश को एम.एससी. एग्री एग्रोनॉमी, सृजना चौधरी को एम. एससी. एजी एक्सटेंशन, प्राची जैसवाल को एम.बी.ए., तुषार चौधरी बी. पी. एड., आकृति श्रीवास्तव को बी. एड., सुरभि सिंह को एम. एड. में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के आधार पर स्वर्ण पदक प्रदान किये गये।

ग्यारह मेधावियों को दिए गए डोनर स्वर्ण पदक

आकृति श्रीवास्तव को राजा रतनसेन स्मृति स्वर्ण पदक, पुष्पलता यादव को ठाकुर वेणी माधव सिंह स्मृति स्वर्ण पदक, ज्योति पासवान को स्व. द्वारका नाथ सिंह एवं श्रीमती द्रोपदी सिंह स्वर्ण पदक, सुरभि सिंह को श्रीमती जानकी सिंह स्वर्ण पदक, साँची मिश्रा को प्रो सिब्बन लाल सक्सेना

स्वर्णपदक एवं श्रीमती रामदुलारी लखेर स्वर्ण पदक, ज्योति पासवान को स्व. प्रेमलता पांडेय स्मृति स्वर्ण पदक, निक्कू गुप्ता को स्व. कमाल यूसुफ मलिक स्मृति स्वर्ण पदक, अर्पिता शर्मा को हरिद्वार भट्ट सोनपती देवी स्मृति स्वर्ण पदक, आकृति श्रीवास्तव को प्रो सुमित्रा सिंह स्वर्ण पदक, साम्भवी पाठक को अयोध्या प्रसाद द्विवेदी स्मृति स्वर्ण पदक प्रदान किये गए।

शोधार्थियों को प्रदान की गयी शोध उपाधि

नवम् दीक्षांत समारोह में अपना शोधकार्य पूर्ण कर चुके शोधार्थियों को पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गयी। कला संकाय के अंतर्गत अंकित पांडेय को लोकप्रशासन विषय में, अर्जुन प्रसाद को हिंदी विषय में, धर्मवीर सिंह को भूगोल विषय में, अजहरुद्दीन को भूगोल विषय में, नेहा सिंह को भूगोल विषय में, शिवेंद्र प्रताप सिंह श्रीनेत को भूगोल विषय में, छठू यादव को अर्थशास्त्र विषय में, विनय कुमार पटेल को प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विषय में, विकास कुमार को प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विषय में, नम्रता

पाठक को हिंदी विषय में, कुसुम देवी को हिंदी विषय में, अमित सिंह गोंड को समाजशास्त्र विषय में, अमरनाथ को समाजशास्त्र में, प्रीति को हिंदी में, पल्लवी मिश्रा को हिंदी में, विद्या देवी को हिंदी में, स्वप्निल पांडेय को राजनीतिशास्त्र विषय में, रत्नेश सिंह को राजनीतिशास्त्र विषय में, संजीव कुमार सिंह को प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विषय में शोध उपाधि प्रदान की गयी। विज्ञान संकाय के अंतर्गत शिव प्रसाद पांडेय को भौतिकी विषय में, जहीर हसन को वनस्पति विज्ञान में, अवनीश कुमार को भौतिक विज्ञान में, विपिन कुमार को वनस्पति विज्ञान में, दिव्य दर्शन तिवारी को भौतिक विज्ञान में, आलोक कुमार पांडेय को भौतिक विज्ञान में, प्रिया श्रीवास्तव को भौतिक विज्ञान में शोध (पीएच.डी.) उपधि प्रदान की गयी। इसके अतिरिक्त वाणिज्य विषय में उदयन भदौरिया, आशीष यादव तथा शिवकुमार मौर्य को तथा शिक्षा संकाय के अंतर्गत धर्मवीर, दिलीप कुमार त्रिपाठी एवं रामबाबू को शोध उपाधि प्रदान की गयी।

'कैम्पस कनेक्ट' तथा 'उत्कर्ष' का हुआ लोकार्पण

दीक्षान्त समारोह के शुभावसर पर मा. कुलाधिपति महोदया श्रीमती आनन्दीबेन पटेल के कर–कमलों से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित मासिक समाचार बुलेटिन 'कैम्पस कनेक्ट' के नवम्बर अंक का विमोचन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. अनिल कुमार त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि

मा. रजनी तिवारी, कुलपति प्रो. कविता शाह तथा कार्य परिषद् के सदस्यगण के साथ बुलेटिन के सम्पादक प्रो. हरीशकुमार शर्मा तथा सह–सम्पादक डॉ. अविनाश प्रताप सिंह भी मंच पर उपस्थित रहे। 'कैम्पस कनेक्ट' के साथ ही नवम् दीक्षांत समारोह के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका एवं वार्षिक प्रतिवेदन

'उत्कर्ष' का भी विमोचन हुआ। इसी अवसर पर प्रो. नीता यादव द्वारा तैयार 'सिद्धार्थोत्सव' (चित्र–संचयन) तथा 'योग विरासत' (सम्पादित पुस्तक) का विमोचन भी किया गया।

कुलाधिपति ने ली विश्वविद्यालय की समीक्षा बैठक

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में प्रवास के दूसरे दिन उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय की कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने विश्वविद्यालय के अधिकारीगण एवं शिक्षकगण के साथ एक विस्तृत समीक्षा बैठक की। बैठक में कुलपति प्रोफेसर कविता शाह सहित सभी अधिकारी, विभागाध्यक्ष एवं प्रकल्प प्रभारी उपस्थित रहे।

बैठक के प्रारंभ में राज्यपाल ने विश्वविद्यालय में आयोजित नवम् दीक्षांत समारोह की सफल एवं गरिमामय सम्पन्नता पर प्रसन्नता व्यक्त की। राज्यपाल ने विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि नेट एवं जेआरएफ में विद्यार्थियों का चयन बढ़ रहा है, जो सकारात्मक संकेत है। उन्होंने शोध परियोजनाओं, शिक्षकों द्वारा प्राप्त पेटेंट्स तथा नवाचार को सराहनीय बताते हुए कहा कि शोध कार्य समाजोपयोगी होना चाहिए, जिससे शिक्षा एवं समाज दोनों को प्रत्यक्ष लाभ मिल सके। उन्होंने एनईपी आधारित एकीकृत पाठ्यक्रमों, पर्यावरण विज्ञान, संगीत एवं ललित कला जैसे नए पाठ्यक्रमों की शुरुआत को विश्वविद्यालय की दूरदर्शी पहल बताया तथा सुझाव दिया कि आगे और तकनीकी एवं नवाचार आधारित कार्यक्रम प्रारंभ किए जाएँ।

उन्होंने साइबर सुरक्षा के महत्व पर बल देते हुए कहा कि यह वर्तमान समय की अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता है। उन्होंने शिक्षकों को इस क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त करने तथा विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को सजग करने से परिवार और उससे आगे पूरा समाज जागरूक होगा तथा भारत साइबर चुनौतियों से प्रभावी रूप से निपट सकेगा। डीआरडीओ, इसरो, आईआईटी, आईआईएम सहित विभिन्न संस्थानों से एमओयू करने, फैकल्टी ट्रेनिंग प्रोग्राम चलाने तथा रक्षा तकनीक से जुड़े पाठ्यक्रम संचालित करने की आवश्यकता पर भी उन्होंने बल दिया। उन्होंने कहा कि भविष्य में भारत रक्षा उत्पादन एवं निर्यात का वैश्विक केंद्र बनने जा रहा है, ऐसे में विश्वविद्यालय को इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए।

सुबह किए गए निरीक्षण का उल्लेख करते हुए उन्होंने छात्रावासों की साफ–सफाई, स्वास्थ्यवर्धक भोजन तथा समुचित व्यवस्था की सराहना की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय को सरकारी योजनाओं से और अधिक फंडिंग प्राप्त कर छात्रावासों में उच्च स्तरीय सुविधाएँ प्रदान करनी चाहिए। उन्होंने स्वच्छता की नियमित मॉनिटरिंग, पर्यावरण संरक्षण तथा प्लास्टिक के उपयोग पर रोक की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया। एक विश्वविद्यालय के उदाहरण का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि घास या प्राकृतिक अपशिष्ट से स्वयं सहायता समूह उपयोगी उत्पाद जैसे टोकरी, दरी इत्यादि बनाकर आर्थिक रूप से सशक्त हो सकते हैं। इस दिशा में विश्वविद्यालय को भी प्रयास करना चाहिए।

राज्यपाल ने डिजिटल लाइब्रेरी की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए इसे शीघ्र विद्यार्थियों को समर्पित करने के निर्देश दिए। उन्होंने इन्क्यूबेशन सेंटर एवं प्लेसमेंट सेल को और अधिक सक्रिय एवं प्रभावी बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने विभिन्न विभागों द्वारा विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण हेतु महत्वपूर्ण स्थानों पर ले जाने की बात कही जिससे कि विद्यार्थी परिसर से बाहर ऐसे स्थानों का भ्रमण कर सकें जो उनके लिए ज्ञानवर्धक सिद्ध हो। उन्होंने विश्वविद्यालय में स्थापित सोलर प्लांट को और विस्तार देने की भी बात कही।

कुलाधिपति ने विश्वविद्यालय के सामाजिक दायित्व का उल्लेख करते हुए कहा कि शिक्षण संस्थानों की पठन–पाठन के कार्य के साथ ही आस–पास के समाज के उत्थान एवं विकास में भी अनुकरणीय भूमिका है। इस हेतु नियमित संवेदनशील सक्रियता बहुत आवश्यक है। उन्होंने विश्वविद्यालय समुदाय में सकारात्मक और पारिवारिक वातावरण के विकास पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि परिसर में साहचर्य, सहयोग और संवेदनशीलता होनी चाहिए। परिसर में रहने वाले परिवारों के बीच नियमित संवाद, सुख–दुख की साझेदारी और सामाजिक–पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों के लिए एक प्रेरक एवं संस्कारित माहौल तैयार करता है। उन्होंने कहा कि एक स्वस्थ, सहयोगी और पारिवारिक वातावरण ही विश्वविद्यालय की कार्यकुशलता, उत्पादकता और मानव संसाधन विकास को सर्वाधिक समृद्ध बनाता है, और यही विकसित भारत के निर्माण की आधारशिला है।

राज्यपाल ने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय आकांक्षी

जनपद सिद्धार्थनगर के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और विश्वविद्यालय निरंतर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि कोई भी कार्य अंतिम नहीं होता। जहाँ आज खड़े हैं, कल उससे आगे बढ़ने का सतत प्रयास ही वास्तविक विकास है। यही भविष्य की दिशा है और यही जीवन का सार है।

समीक्षा बैठक में कुलसचिव दीनानाथ यादव ने राज्यपाल का स्वागत किया तथा समापन उद्बोधन कुलपति प्रो. कविता शाह द्वारा किया गया। समीक्षा बैठक के उपरांत राज्यपाल लखनऊ के लिए प्रस्थान कर गईं।

(पैरोडी)

माई री मैं तौ मोबाइल न धरूँ।
जौ मोबाइल मेरे मन लागो, मैं न दूर करूँ।
प्रात उठत ही लेहुँ हाथ में, अर्धरात्रि तक धारूँ।
निद्रा, भूख, प्यास सब छोड़ू, मोबाइल न बिसारूँ।
सगे सम्बन्धी इष्ट–मित्र सब, हैं तब ही तक अपने।
जब तक मोबाइल की माला, लागूँ ना मैं जपने।
मोबाइल मैं परम महासुख, सब सुख जाके पीछे।
कह हरीश वंचित जासें जो, उनके जीवन छूँछे।।

सम्पादकीय

श्रीधर पाठक की कविता की पंक्तियाँ हैं–

फूलों से नित हँसना सीखो, भँवरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित, सीखो शीश झुकाना।।

प्रकृति हमें सिखाती है, बहुत कुछ सिखाती है और बहुत कुछ देती भी है। प्राणी और प्रकृति का अनादि काल से सह–सम्बन्ध चला आया है। प्रकृति के बिना जीवन की कल्पना हो ही नहीं सकती। प्रकृति के बिना जीवन का आनन्द भी कुछ नहीं हो सकता। सो, मनुष्य प्रकृति पर जीवन की निर्भरता के लिये ही नहीं, आनन्द की खोज और प्राप्ति के लिये भी आश्रित रहा है। प्रश्न यह है कि आज हमें क्यों ऐसा कहना पड़ रहा है कि 'चलो प्रकृति की ओर'। इसका कारण यह है कि एक तो आज हम विशेषकर नगरीय जीवन–शैली अपनाये लोग प्रकृति से दूर हो गए हैं और लगातार दूर होते जा रहे हैं और दूसरी बात है प्रकृति का अतिशय दोहन। प्रकृति के प्रति आज हमारा लगाव कम हुआ है, परन्तु उस पर निर्भरता बढ़ी है। प्रकृति के कैसे–कैसे उपयोग हमने सीख लिये हैं कि जिसके कारण हम निरन्तर उसको क्षति पहुँचा रहे हैं। परम्परागत उपयोग हमारे जीवन में उसका कम होता जा रहा है और नये–नये उपयोग के तरीके हम सीखते जा रहे हैं, जिनमें से कुछ तो बहुत ही खतरनाक भी हैं। हम आज उसे देना भूल गये हैं, लेने पर ही अधिक ध्यान हमारा रह गया है। प्रकृति ने हमें क्या नहीं दिया है और हमने बदले में उसे क्या दिया है! प्रकृति ने हमें जीवन दिया, जीवन जीने के लिए आवश्यक सहूलियत दी, हमारे विकास के लिए उसने अपना सर्वस्व लुटाया; हमारे सुख–दुख की सहचरी बनी। पर हमने बदले में क्या दिया? उसको नष्ट करने पर तुल गए! अपने विकास के बदले उसके विनाश में लग गए! प्रकृति ने अपनी गोद में बैठाकर हमें दुलराया, हमारा जीवन सजाया–सँवारा; पर हम उसकी गोद से छिटककर दूर भागते चले गए। समय है कि अब भी हम चेत जाएं और अपनी माँ प्रकृति की ओर लौटें तथा उससे वैसा ही प्रेम करें, जैसा वह हमसे करती है। प्रकृति से अपने को और अपने से प्रकृति को दूर न होने दें। उसको बचायें, उसकी रक्षा करें, क्योंकि उसकी रक्षा से ही हमारी रक्षा हो सकेगी।

हम प्रकृति–पूजक देश हैं। हमारे यहाँ प्रकृति की पूजा करने की परंपरा हजारों सालों से चलती चली आ रही है। इसका मतलब है कि हम कृतज्ञतावादी लोग हैं। किसी से कुछ लेते हैं, तो बदले में देना भी जानते हैं। प्रकृति से भी हमारा लेन–देन का सम्बन्ध रहा है। हमारे पूर्वज अगर उससे कुछ लेते थे तो बदले में बहुत कुछ देते भी थे। अब हम उससे वह लेते नही जो लेना चाहिए और जो लेकर बदले में उसे देते हैं, वह उसे तो हानि पहुँचाता ही है, हमें भी अन्ततः हानिकर ही सिद्ध होता है। प्रकृति मुक्त भाव से हमें वह सब कुछ देती है जिसकी हमें आवश्यकता होती है। हवा, पानी, तेल, गैस, प्रकाश, पुष्प, पत्र, फल, अनाज, धातु आदि सभी कुछ तो हमें उससे मिलता है। उससे कुछ लिए बिना हमारा काम नहीं चलता। प्रकृति से मिली गर्मी, ठंडक, बरसात, हवा, रोशनी आदि सब हमारे लिये अति आवश्यक हैं; पर अब हम वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से कृत्रिम रूप से इन्हें प्राप्त कर अपने क्षणिक सुख से संतुष्ट हैं कि हमने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली।यह उपकरण प्रकृति को भी हानिकारक हैं और हमें भी। हमें आज यह सोचना होगा कि जिसे हम अपनी विजय मानकर गदगद हैं, कहीं वह हमारी पराजय तो नहीं है। हमारे अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक व्याधियों का कारण कहीं हमारी बनावटी सुख–सुविधामयी जीवन–शैली तो नहीं है? यदि ऐसा है तो हमें बंद कमरों से बाहर आना ही पड़ेगा। प्रकृति के खुले प्रांगण में कुछ पल गुजरने के लिए समय निकालना ही पड़ेगा। सूरज से मिलने वाली धूप से हमें जो कुछ मिल सकता है वह बंद कमरे में हीटर की गर्मी से नहीं मिल सकता। कृत्रिम वातानुकूलित कमरे से बाहर निकालकर कभी किसी बाग–बगीचे में फूलों से खुशबू लेकर आई प्राकृतिक शीतल वायु का सुख लेकर देखिए, अंतर साफ पता चल जाएगा।

आज के भाग–दौड़ भरे अति व्यस्त जीवन में और विशेषकर शहरी जीवन में प्रकृति की वैसी निकटता तो संभव नहीं है जैसी पहले संभव थी; पर यह हो सकता है कि हमें जब भी, जितना भी समय मिले; प्रकृति के बीच अवश्य उसे गुजारें। प्रकृति के पास नहीं जा सकते तो उसे अपने पास ले आयें। जो हमारे हाथ में नहीं है, वह तो नहीं ही है, परन्तु प्रकृति की रक्षा के हितार्थ जो हमारे स्तर पर हो सकता है, वह तो करने की कोशिश करें। जहाँ संभव हो, वृक्ष लगायें। नहीं तो, गमले में ही पौधे लगाकर अपने घरों में रखें। अपने आसपास के बाग–बगीचों, पार्कों को गुलजार करें। अनावश्यक उपकरणों का प्रयोग न करें। अकारण प्रकृति को हानि न पहुँचायें, साफ–सफाई का ध्यान रखें। अपने को दूषित और प्रकृति को प्रदूषित न करें। प्रकृति के प्रति जो पवित्र भाव हमारे पूर्वजों ने विरासत में हमें प्रदान किया है, उसकी रक्षा करें। प्रकृति के पास जायें तो उसमें रम जायें। उतने क्षणों को अपने को भूल जायें। अपने तनावों, चिताओं को किनारे करके प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण करें। प्रकृति हमारा तनाव दूर करने में भी मददगार होती है और हमें चिन्तामुक्त करने में भी सहायक बनती है। अतः आवश्यक है कि उसके सौंदर्य में खोयें, उसके आनंद में डूबें। इससे मन शान्त होगा, हृदय निश्चिन्त होगा और आत्म का विस्तार होगा। ऐसा होने से निश्चय ही जीवन सुखी, स्वस्थ और आयुष्मान बनेगा और संसार की भी आयु बढ़ेगी।

दिसम्बर माह का 'कैम्पस कनेक्ट' नवम्बर में आयोजित हुए सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह पर प्रमुखतः केन्द्रित है। इस अवसर पर माननीय अतिथिगण द्वारा दिये गये व्याख्यानों को हमने अविकल रूप में प्रस्तुत किया है। हमें विश्वास है कि आशीर्वचन के रूप में ये विचार हमारे विद्यार्थियों/शोधार्थियों के लिये जीवन भर की सीख बनेंगे और वे इनसे प्रेरणा ग्रहण कर जीवन में सफलता तो प्राप्त करेंगे ही, एक श्रेष्ठ नागरिक का कर्तव्य–बोध कराने में भी यह उनके लिये सहायक सिद्ध होंगे।

यूँ तो 'कैम्पस कनेक्ट' का प्रकाशन अगस्त माह से ही हो रहा है, परन्तु नवम् दीक्षान्त समारोह के मंच से माननीय कुलाधिपति महोदया के कर–कमलों से इसके नवम्बर अंक का लोकार्पण हमारा उत्साह द्विगुणित कर गया। एतदर्थ हम आभारी हैं साहित्य, संस्कृति और कला में विशेष अभिरुचि रखने वाली अपने विश्वविद्यालय की उत्साही कुलपति महोदया के प्रति कि उन्होंने इस कार्यक्रम को आयोजन में सम्मिलित किया और कृतज्ञ हैं श्रद्धेया कुलाधिपति जी तथा अन्य अतिथिगण के प्रति कि जिन्होंने इसका विमोचन कर हमें गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान किया।

अभी भी हमारे विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा शिक्षकों का रुझान इसके प्रति कम दिख रहा है, इसलिये हम पुनः आग्रह करते हैं कि वे इससे जुड़ें और इसके लिये अधिक–से–अधिक लिखें। वस्तुतः तो यह उन्हीं की रचनात्मकता को सामने लाने के लिये है। अतः वे इसका लाभ उठायें। इसको पढ़ें भी और जो लिख सकते हैं वे लिखें भी। तभी इसका उद्देश्य सफल होगा।

दिसम्बर माह की समाप्ति के साथ ही कलैण्डर वर्ष 2025 की समाप्ति भी हो रही है और जनवरी माह से हम आंग्ल (ग्रेगेरियन) नववर्ष–2026 में प्रवेश करने जा रहे हैं। यों तो यह हमारा नववर्ष किसी भी तरह से नहीं है, किसी भी भाग का नहीं है। पर हमारे यहाँ भी चूँकि सारा सरकारी कार्य इसी कलैण्डर के अनुसार ही होता है और विश्व भर में भी इसे मनाने की परम्परा है, सो इसे मनाने में तो कोई हर्ज नहीं है, हम भी मना ही लेते हैं, परन्तु मुख्य बात है अपनी परम्परा की कीमत पर मनाने, न मनाने की। विश्व के साथ हम कदमताल करें, परन्तु अपनी अच्छी चीजों को पीछे छोड़ने या उपेक्षित करने की कीमत पर नहीं। सम्मान हमें अपनी ही चीजों से मिल सकता है। प्रतिष्ठा अपनी ही उपलब्धियों से प्राप्त होगी। नकल से ख्याति नही मिलती। मौलिकता ही प्रसिद्धि का आधार है। सो, यदि अपनी अच्छी चीजों को बिसारेंगे तो कहीं के नहीं रहेंगे। खुदी को बुलन्द रखने के लिये खुद को बुलन्दी पर पहुँचाना होता है और बुलन्दी अपने धरातल पर खड़े होकर यदि मिलती है तो उसका कुछ सुख ही अलग होता है, क्योंकि इससे धरातल का गौरव भी बढ़ता है। हमारा धरातल बहुत मजबूत है, गौरवशाली है; बस हमें उस पर मजबूती से खड़े होना है तथा उसे अपने सत्प्रयत्नों से और मजबूत तथा गौरवमय बनाना है। सो, कहना यह है कि हम इस नववर्ष को तो मना लें, परन्तु जब हमारा अपना नववर्ष आये तो उसे और भी अधिक उत्साह से मनायें, जिससे कि दुनिया में उसकी धूम मचे और लोग उसे भी जानें तथा मानें।

हमारा नववर्ष एक दिन का उत्सव नहीं होता है, सप्ताह भर से भी अधिक यह चलता है। यह आधी रात का जश्न नहीं होता, नवरात्र की उपासना का पर्व होता है। उच्छृंखल मस्ती इसमें नहीं होती; आत्मनियन्त्रण के साथ संयम, सदाचार, त्याग, उपवास आदि की साधना इसमें होती है। भोग–भाव के बजाय भक्ति–भाव इसमें प्रबल होता है। तो आइए, इसी कामना और भावना के साथ दो मुक्तकों के द्वारा आप सबको इस नये साल की भी अग्रिम शुभकामनाएं देते हैं कि चैत्र प्रतिपदा को नवरात्र पूजा के साथ आरम्भ होने वाले अपने देशी नव–संवत्सर के उत्सव को इस विदेशी नववर्ष के जश्न के मुकाबले अधिक उत्साह, गरिमा और समर्पण के साथ मनायेंगे–

आंग्ल नववर्ष फिर से आ रहा, उल्लास नव लेकर।
नया यह रंग देखो भा गया, नव–रीत अब होकर।
बधाई दे रहे हम भी, मगर यह भाव है मन में,
हमारा वर्ष–नव आएगा, जब बदलेगा संवत्सर।।

विदा करके पुराने वर्ष को, हम आगे बढ़ते हैं।
आगे आ रहे नववर्ष का, शुभ स्वागत करते हैं।
हमारी ओर से सबको बधाई ढेर सारी है,
हृदय से अनगिनत शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।।

वन्देमातरम्!

नवम दीक्षांत समारोह के अवसर पर दिया गया मा0 कुलाधिपति महोदया का अभिभाषण

उच्च शिक्षा राज्यमंत्री माननीय श्रीमती रजनी तिवारी जी; सम्मानित मुख्य अतिथि– निदेशक, भारतीय विज्ञान विभाग एवं अनुसंधान संस्थान, मोहाली, प्रोफेसर अनिल कुमार त्रिपाठी जी; विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर कविता शाह जी एवं कार्यपरिषद् एवं विद्यापरिषद् के सभी सदस्यगण; विश्वविद्यालय के समस्त संकायों के संकायाध्यक्ष; सभागार में उपस्थित सभी जनप्रतिनिधि; आमंत्रित अतिथिगण एवं शिक्षकगण एवं अभिभावको, आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों एवं विभिन्न विद्यालयों से आए हुए मेरे प्यारे छोटे–छोटे बच्चों; देवियों एवं सज्जनों!

भगवान बुद्ध की इस पावन भूमि पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के नवम् दीक्षांत समारोह में उपस्थित होकर मुझे बहुत–बहुत प्रसन्नता हो रही है। दीक्षा का ये पावन पर्व केवल औपचारिकता नहीं है, बल्कि ज्ञान, संस्कार और कर्तव्यों का उत्सव है। यह वह क्षण है, जब छात्र जीवन की साधना पूर्ण होती है और सेवा के एक नए अध्याय का शुभारम्भ होता है।

मित्रो! इस पावन धरती के कण–कण में तथागत के त्याग और करुणा की उजास व्याप्त है। यहाँ की वायु में उनका संदेश आज भी गूँजता हैं। अतः 'अत्त दीपो भव!' अपने भीतर के प्रकाश को जलाओ और उसी से जग को आलोकित करो। मैं सादर नमन करती हूँ उन महात्मा बुद्ध को, जिन्होंने मानवता को, मानव को दुख से मुक्ति का मार्ग दिखाया और इस पावन धरा को भी कि जिसने उनके चरणों का स्पर्श पाया। मैं आप सभी स्नातकों, अध्यापकों और अभिभावकों को इस अवसर पर हृदय से बधाई देती हूँ और कामना करती हूँ कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय से प्राप्त यह दीक्षा आपके जीवन को अर्थ, दिशा और मूल्य प्रदान करे।

आज के समारोह के मुख्य अतिथि प्रोफेसर अनिलकुमार त्रिपाठी जी ऐसे वैज्ञानिक शिक्षक हैं जिन्होंने अनुसंधान, शिक्षा और समता का नेतृत्व– तीनों ही आयामों में उत्कृष्टता का उदाहरण प्रस्तुत किया है। वर्तमान में यह न सिर्फ भारतीय विज्ञान विभाग एवं अनुसंधान संस्थान (IISIR), मोहाली के निदेशक के रूप में वेद, विज्ञान एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार को दिशा दे रहे हैं, बल्कि वैज्ञानिक प्रशासन को एक नई दृष्टि प्रदान कर रहे हैं। विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में आपकी प्रतिभा और समर्पण को भारत की शीर्ष वैज्ञानिक संस्थाओ ने सम्मानित किया है। आपका जीवन और कार्य यह प्रमाणित करते हैं कि वैज्ञानिकता केवल प्रयोगशाला तक सीमित नहीं है। वह समाज के सतत विकास और आत्मनिर्भरता का भी आधार बन सकती है। आपके नेतृत्व में न केवल भारतीय विज्ञान ने नई ऊँचाई प्राप्त की है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन का एक स्रोत भी निर्मित किया है।

आज के समारोह में कुल 53,986 उपाधियाँ डिजिलॉकर में अपलोड की गई हैं, जिनमें 20,304 छात्र और 35,642 छात्राओं की उपाधियाँ सम्मिलित हैं। पदक प्राप्तकर्ताओं की बात करें तो कुल वितरित 37 पदकों में से 5 पदक छात्रों को और 32 पदक छात्राओं प्राप्त हुए हैं। मैने कई अभिभावकों से बात की तो पता चला कि कैसी परिस्थितियों में बच्चे पढ़ते हैं। और ऐसी स्थिति मेंउनके द्वारा गोल्ड मेडल लाना सराहनीय बात है। उनके अभिभावक सामान्य परिवार से आते हैं और माताएं पढ़ी–लिखी भी नहीं हैं। पिताजी कोई सामान्य काम कर रहे हैं। लेकिन अपनी बेटियों को आगे बढ़ा रहे हैं। ये भी उत्तम बात है। यह परिणाम महिला सशक्तीकरण की एक उज्ज्वल मिसाल है। अगर अवसर, वातावरण और विश्वास मिले तो वे किसी भी क्षेत्र में ऊँचाई को छू सकती हैं। आज की छात्राएं केवल कंधे से कंधा मिलाकर नहीं, बल्कि अपने सहपाठियों से एक कदम आगे बढ़कर अपनी प्रतिभा का प्रकाश फैला रही हैं। अभी हाल में विश्व कप 2025 में भारत की बेटियों ने तिरंगे को ऊँचा फहराया और तब उन्होंने यह सन्देश दिया कि नारी शक्ति केवल प्रेरणा नहीं; बल्कि बल, उत्साह और विजय की प्रतीक भी है।

मैं सिद्धार्थ विश्वविद्यालय को क्यू एस आई गेज गोल्ड रैंकिंग प्राप्त करने पर कुलपति, प्राध्यापकगण, छात्र–छात्राओं और समस्त विश्वविद्यालय परिवार को हृदय से बधाई देती हूँ। यह उपलब्धि विश्वविद्यालय की गुणवत्ता, उत्कृष्टता और नवाचार के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है। अभी हमें रुकना नहीं है और हमें नैक एक्रीडेशन में भी आगे बढ़ना है। इसके लिए सभी अध्यापक तैयारी करें और मैं 15 दिन के बाद आपको राजभवन में आमंत्रित करूँगी और मैं स्वयं देखूँगी कि आपने कैसी तैयारियाँ की हैं। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि यहाँ पर विदेशी छात्र–छात्राभी अधिक संख्या में नामांकन करके विश्वविद्यालय की शिक्षा–प्रणाली के अंग बने हैं। यह इस विश्वविद्यालय की बढ़ती वैश्विक प्रतिष्ठा का प्रभाव है। अभी एक बेटी अकेली अवॉर्ड लेने आई। उसके पास 2 या 3 अवॉर्ड हैं। अभी पता चला कि उसके पास केवल माता हैं, पिता नहीं हैं। वो लड़की नेपाल की है। लेकिन शुरू से उसकी माँ उसे भारत में पढ़ा रही हैं। वह माँ अपनी बेटी को नेपाल में नहीं पढ़ाती है। भारत में पढ़ाती है। ये है उसकी सोच और उसको आज गोल्ड प्राप्त हुआ है। उनको मैं विशेष बधाई देती हूँ।

रिसर्च एंड डेवलपमेंट सेल तथा इंटरनेशनल सेल की स्थापना इस दिशा में उठाए गए सराहनीय कदम हैं जो शोध, नवाचार और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को नए आयाम प्रदान करते हैं। मैं यह बात कहना चाहती हूँ कि हमारी सभी यूनिवर्सिटी रिसर्च में बहुत पीछे हैं। कोई मेहनत करना ही नहीं चाहता। हमारे प्रधानमंत्री जी ने रिसर्च के लिए करोड़ों रुपया आवंटित किया है बजट में। हमें क्या और कौन से विषय पर पीएच.डी. करनी है, शोध करना है, जब तक बैठकर नहीं सोचोगे तब तक कैसे अच्छा काम होगा। आप विषय का मंथन करो और निकालो कि कौन से विषय पर जरूरत है रिसर्च करने की। काफी विषय हैं रिसर्च करने को और रिसर्च करने के लिए राज्य सरकार और केंद्र सरकार फंड देती हैं और बजट देती हैं। लेकिन, हमें प्रोजेक्ट वहाँ भेजना पड़ता है। जब तक हम प्रोजेक्ट तैयार करके वहाँ नहीं भेजेंगे तब तक फंड कहीं से नहीं मिलेगा।

मित्रो! अभी मैंने साइंस एंड टेक्नोलॉजी, लखनऊ के साथ बैठक की। वे लोग फंड अलॉट करते हैं। हमारी कई यूनिवर्सिटियों ने इसमें प्रोजेक्ट भेजे थे, लेकिन इसका उद्देश्य क्या है? इसका उद्देश्य, इसका परिणाम क्या आएगा, फायदा क्या होगा, इसका कोई उल्लेख नहीं था और इसी वजह से वे रिजेक्ट हो गए। ऐसे प्रोजेक्ट थोड़े होते हैं। हमारे अध्यापक भी पीएच.डी. करके आए हैं और लेखक भी हैं, लिखते भी हैं। आप पढ़ते रहें। लोगों के पास जाइए, लोगों के साथ बैठिए। गाँव में जाइए, किसानों को मिलिए। क्या रिसर्च की जरूरत है, जानिए। महिलाओं को मिलिए। क्या प्रॉब्लम हैं उनकी, समझिए। प्रेगनेंट वूमेन से मिलिए कि क्या प्रॉब्लम होता है। ऐसे कई विषय हैं जिस पर हम रिसर्च कर सकते हैं और इसी वजह से हमारा एक प्रयास है कि हम ज्यादा से ज्यादा रिसर्च पर काम करें। रिसर्च के लिए हम प्रोजेक्ट तैयार करें। इसके लिए हमें हम आगे बढ़ रहे हैं। दोस्तों मैं चाहूँगी कि विश्वविद्यालय अपने परिक्षेत्र के गाँवों में नियमित संपर्क स्थापित करें, उनकी आवश्यकताओं को जानें, उनकी समस्याओं को समझें और उनके समाधान में सहभागी बनें। ग्रामीण क्षेत्र ही भारत की आत्मा है। यदि हम वहाँ के युवाओं को सक्षम बना सके तो राष्ट्र स्वयं सशक्त हो सकता है। गाँव में रोजगार की जो अपार संभावनाएं हैं, जैसे– कृषि–आधारित उद्योग, हस्तशिल्प, बागवानी, पशुपालन। उन्हें विभिन्न प्रकार के मार्ग से प्रोत्साहित किया जा सकता है और साथ ही समय–समय पर गाँव का भ्रमण कर वहाँ के नागरिकों को स्वच्छता से संबंधित मूलभूत जानकारी देना प्राथमिक चिकित्सा की सामग्री उपलब्ध कराना– यह एक छोटा सा प्रयास प्रतीत हो सकता है, किंतु इसका प्रभाव अत्यंत व्यापक और कल्याणकारी होता है।

मैं हेलीकॉप्टर से ऊपर उड़ती थी। मेरी नजर नीचे थी। कई ऐसे एरिया हैं जिनमें नीचे बहुत ही ग्रीनरी दिखाई पड़ती है। किसानों ने खेती की होगी। लेकिन जब मैंने सिद्धार्थनगर और बढ़नी देखी तो नीचे सब कुछ खाली था। कुछ नहीं था। मित्रो! सिर्फ धरती दिखाई पड़ती थी। थोड़े अमृत सरोवर दिखे। यह देखकर खुशी हुई। क्या जरूरत है सिद्धार्थनगर और कुशीनगर जैसे क्षेत्रों में? पिछड़ा एरिया है और शिक्षा के माध्यम से पिछड़े एरिया को भी हम आगे बढ़ा सकते हैं। और इसी वजह से हमें ऐसी खेती करनी पड़ेगी, जो कम पानी में भी हो सकती है। अभी तो राइस के लिए पानी की जरूरत थी। पूरा भरा हुआ लगता था। लेकिन रिसर्च के बाद आप पानी गेहूँ की तरह भी पका सकते हैं। गेहूँ पानी में नहीं फलता था। लेकिन अब जरूरत नहीं है। मित्रो, तो ऐसे कई रिसर्च हमारी यूनिवर्सिटियों ने किये हैं, लेकिन वहाँ तक अभी तक नहीं पहुँचे हैं। किसने किया? जानिए, बुलाइए उनको, मार्गदर्शन लीजिए उनसे और उपजाऊ खेती कैसे हो सकती है, क्या–क्या हम कर सकते हैं, इस बारे में भी हमें वर्कशॉप और सेमिनार करना चाहिए और जहाँ यह काम होता है वहाँ कुछ अध्यापकों को भेजकर स्टडी का रिकॉर्ड रखना चाहिए। उनको बुलाना चाहिए, ताकि वे हमें मार्गदर्शन करें।

पशुओं में अब हमारी गाएं देखो। गुजरात की गिर गाय 18 से 20 लीटर दूध– सुबह शाम 40 लीटर दूध देती है। कई लोग माँग करते हैं। कई किसानों की मैंने माँग पूरी करवाई और मँगाकर दिया है और खेती में भी इसका उपयोग हो रहा है। गोबर का उपयोग टर्मरिन का उपयोग और मूत्र से बने अनेक प्रकार के उपयोगी तत्त्व। अभी मैं बलिया गई थी। बलिया में जिसको मैंने गाय दिलवाई थी– तीन गाय दिलवाई थीं। उनके खेत और जिसे वे गायें दीं, उसे देखने के लिए 25 किलोमीटर दूर मैं और रजनी तिवारी दोनों गए थे और वहाँ जो बैठे लोग थे इतनी सराहना करते थे कि इससे हमारे आसपास की खेती में सुधार हुआ है। तो यह है। दुधारू पशु कहीं से भी लाइए और करिए खेती और करिए दूध का उत्पादन। अभी तो डेयरी भी बन रही है और डेयरी के माध्यम से भी हम दूध बेचकर पैसे कमा सकते हैं और बच्चों को पढ़ा सकते हैं।

विश्वविद्यालय परिसर के साथ–साथ आसपास के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में वृक्षारोपण किया जाए। मुझे तो नीचे वृक्षारोपण दिखाई नहीं पड़ा। कहीं–न–कहीं होगा। पिछले 5 सालों से मैं देख रही हूँ। 10 लाख, 25 लाख, 32 लाख, इतने करोड़–कितने करोड़ पौधे लगाते हैं। अभी मुझे याद है कि दो साल पहले मैं सीतापुर में गई थी पौधारोपण करने के लिए। जब हमारे अधिकारी मुझे मिलने के लिए आए तो मैंने पूरा मार्गदर्शन दिया। गड्ढा तैयार रखो और गड्ढे के पास पौधा रखो। पौधा बड़ा होना चाहिए। उसके लिए फर्टिलाइजर होना चाहिए, जैसे गोबर और पानी की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए। यह सब मैंने किया और बताया कि माँ के नाम यह पेड़ लगाना है और जो पेड़ लगाएगा उसे पेड़ के पास जाने पर माँ के नाम पर होने से अपनी माँ का ध्यान भी आयेगा। पर, जब मैं वहाँ पर पहुँची सुबह में 9.00 बजे, तब पता नहीं था। उनको भी पता नहीं था अधिकारियों को कि मैं पूरे एरिया में भ्रमण करूँगी। तो मैंने और हमारे साथियों ने M.L.A., M.P. लोगों ने पौधारोपण किया फिर मैंने कहा मुझे भाषण नहीं करना है, लेकिन मुझे एक–एक पौधा लिये जहाँ हमारे बच्चे खड़े हैं, वहाँ तक हमें बच्चों को मिलना है। और मैं जैसे ही आगे बढ़ी, वहाँ हमारे बच्चे हाथ से खुदाई करते थे और एक भी गड्ढा नहीं था। मैंने पूरा भ्रमण किया, बच्चों के साथ बातचीत की, पौधे का नाम बताया। क्या हुआ, सब वापस आए और मैंने कहा– 'लाओ माइक, मुझे भाषण करना है' और मैंने माइक लिया। वहाँ D.M. उपस्थित थे, कमिश्नर उपस्थित थे, पुलिस अधिकारी उपस्थित थे, सेना के भी अधिकारी उपस्थित थे। पौधा लगाते भी थे, पर माँ का नाम नहीं लिखते थे। तो मैंने उनके लिए डाँट लगाई कि माँ है कि नहीं है। माँ है तो क्यों नाम नहीं लिखा है और फिर मैंने कहा कि मैं बहुत ही नाराज हूँ आप सबसे और ऐसे पौधारोपण नहीं हो सकता है। इससे बेहतर है कि आप पौधारोपण मत करो। इसके पीछे उद्देश्य होता है। माँ का सम्मान और पर्यावरण की रक्षा इसके पीछे का उद्देश्य है। हमारे लिए नही भीं, तो हमारे भविष्य की पीढ़ी के लिए तो काम करना चाहिए– वह उद्देश्य इसके पीछे है। पानी बचाना हमारा उद्देश्य है। पर्यावरण बिगड़ रहा है, ऑक्सीजन कम हो रही है, बीमारियाँ बढ़ रही हैं, हॉस्पिटल बढ़ रहे हैं और इसी वजह से मैंने नाराजगी व्यक्त की और मैं कार्यक्रम पूरा करके वापस आ गई।

पूरा वायरल हुआ पूरे देश में और कई लोगों का फोन आया। क्या ऐसा हुआ था? मैंने कहा, जो होता है वही मैं बोलती हूँ और बोलना चाहिए, ऐसा मैं मानती हूँ। हम इसके पीछे परिश्रम करते हैं। हमारे उद्यान वाले पौधे तैयार करते हैं। लेकिन, इसका सही ढँग से उपयोग नहीं होता है और जब उद्देश्य का फल नहीं मिलता है तो नाराजगी तो व्यक्त करनी पड़ती है। लेकिन साढ़े नौ बजे रात को मेरा एडीसी वीडियो लेकर ऊपर आया और मुझे बताया कि मैम, वीडियो देखो और मैंने वीडियो देखा तो देखा कि जितने पौधे थे, सारे लगा दिए गए थे और सब पर माँ के नाम भी लिख दिए थे और इतना सुंदर लगता था। मैंने धन्यवाद–पत्र भेजा और कहा कि जो मैं सुबह नौ बजे करना चाहती थी वह आपने नहीं किया, लेकिन आपको रात नौ बजे तक करना पड़ा। मेरी नाराजगी से आपको करना पड़ा। तो, अधिकारी भी इसी तरह काम करते रहते हैं। उसको ध्यान में लेना चाहिए कि हम ऐसे पद पर प्रतिष्ठित हैं, कि जिसके कारण प्रजा हमसे बहुत ही अपेक्षा करती है।

फिर दूसरे साल मैं वहाँ गई और मैंने स्वयं पसंद किया कि मुझे वहाँ ही जाना है। मतलब दूसरे जिला में। मैंने पहले से कहा कि जहाँ मैंने वृक्षारोपण किया था, वह मुझे आज देखना है और एक साल बाद जब मैं वहाँ पहुँची तो इतना सुंदर लगता था वह पूरा एरिया और माँ का नाम भी लिखा हुआ प्रतीत होता था। वह पूरा दृश्य इतना सुंदर लग रहा था कि वहाँ के सभी अधिकारियों ने मेरे साथ खड़े होकर फोटो खिंचवाये। फिर मैंने पूछा कैसा लगा? अच्छा लगा कि नहीं लगा? तो दोस्तो, हमें इस संकल्प से, इस प्रतिबद्धता से, जो काम हमारे लिए है वह करना है। हमें जो जिम्मेदारी मिली है,उसे हमें गम्भीरतापूर्वक ही निभाना चाहिए। शिक्षा तो वही है न! बाहर जाकर भूल गए सब कुछ। वही कमियाँ हैं हमारे अंदर। हम याद नहीं रखते हैं।

मैं विश्वविद्यालय से यह भी अपेक्षा करती हूँ कि छात्र–छात्राओं को समय–समय पर शैक्षणिक भ्रमण के लिए ले जाया जाए। दो गाड़ियाँ हैं आपके पास। 50 सीट एक गाड़ी में हैं। एक भ्रमण में एक साथ सौ बच्चे जा सकते हैं। और फ्री में कोई भ्रमण नहीं करवाना है। पेट्रोल–डीजल का खर्च स्टूडेंट दें और आसपास की प्रकृति का भ्रमण करें। नेपाल जाइए, देखिए अच्छे–अच्छे संस्थान हैं। उनका भ्रमण कीजिए और अपने ज्ञान–विज्ञान में बढ़ोतरी कीजिए। मैं अपेक्षा करती हूँ कि हर सप्ताह सौ बच्चे भ्रमण के लिए जाएं सैटरडे–संडे को। दो गाड़ियाँ हैं। अब और गाड़ियों की जरूरत नहीं है। मित्रो! यह व्यवस्था आपके पास है। मैंने अभी राजभवन के कई कर्मचारियों, अधिकारियों और किचन वालों को– सबको दो दिन का भ्रमण करवाया और मैंने यह कहा कि भ्रमण साइकिल पर करना है और आपको डेढ़ सौ किलोमीटर का अंतर काटना है और साथ में भोजन ले जाना है और तीन कस्तूरबा गांधी विद्यालयों में जाना है और वहाँ जाकर पहले तो सफाई करनी है और 50 पौधा वहाँ लगाना है, उसको पानी देना है और फिर बच्चों के साथ बैठकर उनसे चर्चा करनी है। उनकी आपत्तियाँ जाननी हैं और रिपोर्ट तैयार करके मुझे देनी है, जिससे कि मैं कस्तूरबा गांधी विद्यालय में जो कमियाँ हैं उन कमियों को पूरा कर सकूँ। लोगों में इतना उत्साह था कि सब बोलना चाहते थे कि हम यहाँ गए, वहाँ गए। हमारे संविदा वाले उद्यान वाले लड़के–लड़कियाँ भी गए कि हमें जाना है और हमने सबको छुट्टी दे दी और ए. डी. सी. को भी बोल दिया, जो दोनों ए. डी. सी. हैं कि मेरी सुरक्षा करने की जरूरत नहीं है। आप जाइए और सब कुछ करवाकर वापस आइए।

तीन टीमें बनीं 50–50 लोगों की। 150 लोग साइकिल पर जाकर आए। साइकिल–यात्रा निकाली। हमारे पास इतनी तो साइकिल भी नहीं थी। तो साइकिल वालों को बुलाया और उनके पास से हम लोगों ने साइकिल माँगी और उन लोगों ने दी। उन पर बैठकर सब लोग गए और इसके बाद जब साइकिल वालों ने यह सब देखा तो उन्होंने कहा कि हम 50 प्रतिशत कम पैसे लेकर साइकिल दे रहे हैं। जिसको भी खरीदना है खरीद ले। हमारे कई लोगों ने साइकिलें खरीदीं और आज साइकिल पर भ्रमण करते हैं और वेट कम कर रहे हैं। लिवर खराब है तो अच्छा बना रहे हैं। सब कुछ करना पड़ता है मित्रो। बल्कि उनके व्यक्तित्व का संतुलित और सर्वांगीण विकास भी करते हैं। इससे उनके भीतर सामाजिक संवेदना जागृत होती है जिससे वह अपने देश, अपनी संस्कृति तथा अपनी जड़ों की गहराई से जुड़ पाते हैं। आप जिस भू–भाग में रहते हैं, यह धरा पर्यावरण, सौंदर्य और जैव विविधता की दृष्टि से समृद्ध है। हमारा पर्यावरण संतुलित रहेगा तभी हमारा जीवन भी संतुलित रहेगा। माननीय प्रधानमंत्री जी के दूरदर्शी प्रयासों– एक पेड़ माँ के नाम, स्वच्छता अभियान तथा हरित भारत जैसे अभियानों ने एक जन–आंदोलन का रूप लिया है। इसी कड़ी में आज विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर कविता शाह द्वारा अनूदित पुस्तक 'पर्यावरण प्रभाव आकलन की विवरण पुस्तिका : अवधारणा और अभ्यास' का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल शैक्षिक दृष्टि से उपयोगी है, बल्कि पर्यावरण चेतना की दिशा में भी एक सशक्त कदम है। इसके लिए प्रोफेसर कविता शाह जी, उनकी टीम को हृदय से बधाई एवं शुभकामनाएं देती हूँ। लेकिन एक पुस्तक नहीं चलेगी। सभी शिक्षकों को एक–एक पुस्तक साल में एक–एक विषय पर तैयार कर लेनी चाहिए। ध्यान रखिए,अगले साल आपको यह सब कुछ दिखाना पड़ेगा।

आज जब हम भारत की प्रगति–यात्रा को देखते हैं तो हृदय गर्व से भर उठता है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में आज भारत उस ऊँचाई पर पहुँच चुका है जहाँ से यह केवल इतिहास नहीं रच रहा, बल्कि भविष्य को दिशा दे रहा है। एक समय था जब हम विकास की अंतिम पंक्ति में खड़े माने जाते थे और आज हम विश्व पटल पररिकॉर्ड पर रिकॉर्ड स्थापित कर रहे हैं। यह हमारी क्षमता है। यह परिवर्तन केवल आँकड़ों का नहीं है, बल्कि आत्मविश्वास, सामूहिक सामंजस्य और कर्मठता की कहानी है। मित्रों स्वस्थ–संपन्न नारी और सशक्त भारत इसका उज्ज्वल उदाहरण है। 17 सितंबर को प्रधानमंत्री जी के जन्मदिन और 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी जी के जन्मदिन तक चले इस जन–आंदोलन में भारत ने एक नहीं, बल्कि तीन गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित किये। एक महीने में 3 करोड़ 21 लाख से अधिक लोगों का स्वास्थ्य प्रपत्रों पर पंजीकरण हुआ। एक सप्ताह में 10 लाख महिलाओं द्वारा स्तन कैंसर की ऑनलाइन जांच हेतु पंजीकरण और 1,25,000 से ज्यादा नागरिकों ने विभिन्न रोगों के लक्षणों की जाँच के लिए विभिन्न प्रपत्रों का उपयोग किया। यह उपलब्धियाँ किसी आँकड़े की कहानी नहीं हैं, बल्कि उसे नए भारत की पहचान हैं जो डिजिटल नवाचार, सरकारी प्रतिबद्धता और सामुदायिक सहभागिता के त्रिवेणी–संगम से आगे बढ़ रहा है।

मैं इतना ही कहती हूँ कि जो काम हुआ, उसी समय उसकी जाँच के बाद आपने क्या किया? उसकी सेवा या उसके ऑपरेशन के लिए क्या किया? या तो उसकी दवाइयों के लिए क्या किया? यह भी मैं जब मीटिंग करूँगी तो आपसे पूछूँगी। आज भारत रक्षा, अंतरिक्ष विज्ञान, कृषि, खेल, प्रौद्योगिकी हर क्षेत्र में नए वैश्विक आयाम रच रहा है। हमारी रेलवे आधारित मोबाइल लांचर मिसाइल का सफल प्रक्षेपण हो चुका है और भारत के सबसे संचारक उपग्रह सीएमएस–3की सफलता आत्मनिर्भर भारत की पहचान है जो अपने बल पर उड़ान भरता है। हमारे वीर युवा ग्रुप कैप्टन सुधांशु शुक्ला ने अंतरिक्ष में भारत का ध्वज लहराया तो दूसरी ओर हमारी बेटियों ने मैदान में महिला क्रिकेट विश्व कप 2025 का खिताब जीतकर भारत को विश्व विजेता बनाया। अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में हम तीव्र गति से आगे बढ़ते हुए आज विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर अग्रसर हैं। पढ़िए जरा! स्टूडेंट, अध्यापक भी जरा इस पर चर्चा करें कि इंग्लैंड में क्या हो रहा है? विश्व के अन्य देशों में क्या हो रहा है? यू. के. जैसे देश से भारत कैसे आगे बढ़ा?

हमारी अर्थव्यवस्था कैसे सतत आगे बढ़ रही है? यह सब विद्यार्थियों के लिये सीखने–समझने की बात है। विश्व के लोग तो इस पर अध्ययन कर ही रहे हैं।

आज का भारत क्या है, यह सबको पता होना चाहिए। दुख की बात है कि आप सबको पता ही नहीं। मैं अध्यापकों और विद्यार्थियों से यह आग्रह करती हूँ कि जितनी भी हमारी उपलब्धियाँ हैं, उन सब पर एक विशेष चर्चा करें। हमारे ब्रह्मोस मिसाइल और आकाश जैसी रक्षा–प्रणालियों ने ऑपरेशन सिंदूर में अपनी अद्भुत क्षमता का प्रदर्शन किया। कहाँ बना है ब्रह्मोस? अपने यू. पी. में बना है, उत्तर प्रदेश में। पता होना चाहिए आप लोगों को। और जी एस टी में कटौती जैसे सुधारों ने आर्थिक संरचना को कैसे और अधिक सशक्त बनाया है, यह सब केवल उपलब्धियाँ ही नहीं हैं, बल्कि नए भारत की जीवंत कथा है। एक ऐसे भारत की, जो आत्मविश्वास से भरा हुआ है, कर्मनिष्ठ है और अपनी पहचान स्वयं गढ़ रहा है। आज भारत विश्व मंच पर सिर ऊँचा करके खड़ा है। जहाँ पहले हम दूसरों का अनुसरण करते थे,वहीं अब हम पूरे विश्व को दिशा दे रहे हैं। जितनी विश्व की समितियाँ हैं, उन सभी में भारत नहीं होता। हम नहीं होते। लेकिन, भारत के प्रधानमंत्री को इनवाइट किया जाता है– मार्गदर्शन के लिए। यह हमारी क्षमता है। हमारा हर क्षेत्र– शिक्षा से लेकर, विज्ञान–तकनीक से लेकर संस्कृति तक, एक ही संदेश देता है। 21वीं सदी परिवर्तन की सदी है। अभूतपूर्व बदलाव, नवाचार और नए आयाम की सदी निस्संदेह भारत की सदी है।

भारत आज एक नए आत्मविश्वास के साथ विश्व मंच पर खड़ा है।हमारे कदमों में विकास की झलक है, चाल में प्रगति की आहट है और सोच में संकल्प की गरिमा है। पूरा देश आज विकसित भारत के उस सपने को साकार करने में जुटा है, जहाँ गति भी है और प्रगति भी है और लोकहित सर्वोपरि भी है। आज भारत का नौजवान अवसरों के सुनहरे युग में जी रहा है। आज वह केवल नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि रोजगार सृजन करने वाला नवयुवक भारतवासी बन चुका है। जब बंदे भारत की हाई स्पीड ट्रेन पटरियों पर दौड़ती है, जब बुलेट ट्रेन परियोजना रफ्तार पकड़ती है, जब चारों दिशाओं को जोड़ती एक्सप्रेस वे और सुरंगे पहाड़ों को चीरकर नई राह बनाती हैं; तब भारत की गति भी दिखती है और प्रगति भी दिखती है। हर सड़क, हर रेलवे लाइन, हरपुल भारत के उज्ज्वल कल की ओर बढ़ता एक कदम है। आज भारत दृढ़ और सक्षम है। आज का भारत शांति में विश्वास रखता है, परंतु उकसाने पर शांत नहीं रहता और दमदार जवाब देना जानता है। जरूरत पड़ने पर घर में घुसकर मारता है। यह वही नया भारत है, जो करुणा में भी शक्तिशाली है, जो विज्ञान में भी सांस्कृतिक है और जो प्रगति में भी परंपरा से जुड़ा हुआ है। आप इसी परिवर्तनशील भारत के युवा प्रतिनिधि हैं। आपकी ऊर्जा, आपकी प्रतिभा और आपकी दृष्टि भारत की अगली छलाँग तय करेगी। इसीलिए मैं आपसे केवल यही कहना चाहूँगी कि सपने देखें, पर उन सपनों को कर्म में बदलें क्योंकि नया भारत सपनों पर नहीं, संकल्प और साधना पर विश्वास करता है।

अंत में आप सभी को पुनः दीक्षांत समारोह की बहुत–बहुत बधाई। आपके उज्ज्वल भविष्य और राष्ट्र–विकास की ओर उसमें आपके सक्षम योगदान की कामना करती हूँ। आज सुबह में जब मैं आई तो हमारे सुरक्षाकर्मियों ने 9 से 15 साल की बेटियों को एचपीवी वैक्सीन लगाने के कार्यक्रम का आयोजन किया और जितने पुलिसवाले जनपद में हैं उनके परिवार में जितनी बेटियाँ हैं– जो 9 से 15 साल की बेटियाँ हैं, उनको वैक्सीन दिलाने के लिए वह प्रयासरत रहते हैं। अपने बेटी को देना है यह पता ही नहीं था और मैं जहाँ–जहाँ भी जाती हूँ वैक्सीन दिलवाने हेतु प्रयासरत रहती हूँ। हमने हजारों बेटियों को एसपीबी वैक्सीन दिलवाई है। सर्वाइवल कैंसर से बचाव के लिए वह है। आज भारत में और खासकर उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक महिलाओं को गर्भाशय का कैंसर है और इसी वजह से भारत के प्रधानमंत्री जी ने अपने जन्मदिन से लेकर महात्मा गांधी के जन्मदिन तक यह काम करवाया, क्योंकि हमारी महिलाएं जाती नहीं हैं। और हमारे घर में रहे पुरुष, उनको तो पता ही नहीं है कि हमारी बहू या बेटी के लिए कुछ प्रयास करना चाहिए। बहुत से तो दारू ही पीते रहते हैं और गलत तरीके से कुछ खाते–पीते रहते हैं।

अतः इतना ही कहूँगी मैं कि यहाँ जितने भाई–बहन बैठे हैं। यह छह महीने के अंदर दो वैक्सीन लगवाने होते हैं और एक वैक्सीन की कीमत 1250 रुपया पड़ती है। यदि आपके पास 2500 रुपये नहीं है तो आज अपनी बेटी के नाम पर अकाउंट में लिख दीजिए कि 2500 रुपये उधार दिये हैं और जब उसकी शादी हो तब आप जो पैसे खर्च करोगे न, मंडप लगाओगे, उस टाइम में टेंट लगाओगे; तो उस टाइम में 2500 रुपये कम देना। मंजूर है? आप सबको वैक्सीन दिलवाइये और इनको बचाइए। एचबी टेस्ट यानी हीमोग्लोबिन टेस्ट करने की बहुत–बहुत आवश्यकता है आपके यहाँ। यहाँ जितनी भी बेटियाँ पढ़ती हैं, सबका एचबी टेस्ट कराओ। 13 से 15 हीमोग्लोबिन होना चाहिए और मैं गारंटी के साथ कह सकती हूँ कि यहाँ जितनी भी बच्चियाँ हैं, उनमें आज की बच्चियों में 8–9 से ज्यादा हीमोग्लोबिन नहीं होगा। इसी वजह से जब यह माँ बनती हैं तो कुपोषित बच्चों को जन्म देती हैं और तब कुपोषित बच्चों को जन्म देने के बाद सुपोषित बनाने के लिए राज्य सरकार और केंद्र सरकार करोड़ों रुपए का खर्च करती है। जो हमें पूर्व में करने की आवश्यकता है, वह हम नहीं करते हैं। प्राइवेट डिपार्टमेंट को जोड़ो, हेल्थ डिपार्टमेंट को जोड़ो और यूनिवर्सिटियों को जोड़ो। हेल्थ सेंटरों को जोड़ो और हर बेटी का एचबी टेस्ट करवाइए और सुझाव दीजिए कि क्या कमी है? उन्हें क्या खाना चाहिए, क्या करना चाहिए और क्या एक्सरसाइज करनी चाहिए। तो ही एचबी ज्यादा होगा और बच्चे सशक्त जन्म लेंगे। सिर्फ सर्टिफिकेट काम नहीं आएगा।

मित्रों! आज आपके पास जो सर्टिफिकेट है,वह कोई काम का नहीं है, क्योंकि हमारे सामने समस्याएं हैं। हजारों समस्याएं हैं। आपका अध्ययन सोद्‌देश्य होना चाहिए। तरह–तरह की पुस्तकें पढ़ना, रिसर्च करना– यह सब आप करोगे तभी विद्या में बढ़ोत्तरी होगी और दुनिया में भी तब आप अपना डंकाबजा सकते हो। 'वंदे मातरम्' 150 साल पुराना है। कार्यक्रम हुआ आपके यहाँ? हुआ हो तो कितने लोगों ने किया? अभी साल भर यह मनाना है। आप खुद आयोजन कीजिए और देखिए कि कौन–कौन से कार्यक्रम हो सकते हैं। मेरे ऊपर निर्भर मत रहिए कि राजभवन से आएगा और मैं वही वैसे–वैसे करूँगा। मैंने मना किया है, मैं कुछ नहीं करूँगी। आप अपने आप तैयार कीजिए कि क्या–क्या कार्यक्रम कर सकते हैं? ऐसा कार्यक्रम रखो जिसमें नदियों का उल्लेख, पहाड़ों का उल्लेख हो। हम तब अधिक प्रकार के कार्यक्रम कर सकते हैं। आँगनबाडी की महिलाओं को कल किट–वितरण करेंगे और पाँचसौ किट आगनबाडी के लिए देंगे, जिसमें बच्चों को बैठने के लिए चेयर होंगी और बच्चों को पढ़ने के लिए स्टडी–टेबल होंगे छोटे–छोटे। 3–4 साइकिलें होंगी खेलने के लिए। आनंदपूर्वक काम करने के लिए कई स्ट्रक्चर होंगे और इसके माध्यम से हमारे छोटे–छोटे बच्चे सीखेंगे और आगे बढ़ेंगे।यह सब काम पिछले पाँच से छह सालों से हो रहा है और अभी तक 50 हजार आगनबाडी में हो चुका है। अब मैं उत्तर प्रदेश की बात करती हूँ अभी तक हम लोगों ने 25,000 से 30,000 तक का सामान पचास हजार आँगनबाडी केन्द्रों तक पहुचाया है। यह विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से सम्भव हुआ है। इसमें कोई सरकार का खर्च नहीं है। ताकत देखिए संस्थाओं की। उनके पास पैसे हैं लेकिन हम उन तक पहुँचते नहीं हैं और उनका उपयोग नहीं करते हैं।

आज के इस कार्यक्रम में मैं खासकर बेटियों को बहुत–बहुत बधाई देती हूँ। आप रुकिए मत। मैंने यह देखा है मित्रो, और खास करके उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में देखा है कि विवाह हुआ, बच्चा हुआ और उसने अपनी जॉब छोड़ दी। अपने बच्चों के साथ, अपने परिवार के साथ जो तुम यह काम करती हो न, उसको तुम जारी रखो। 2 साल, 3 सालया 5 साल बादउनकी क्या हालत है! पहले यह जॉब करती थी 50,000 रुपये महीने का कमाती थी। और अब देखो क्या हालत है। मैं धन्यवाद देना चाहती हूँ पुष्कर सिंह धामी को कि उन्होंने एक बिल पेश किया। इसका विरोध भी हुआ। अगर आप लिव इन रिलेशनशिप में रहना चाहते हैं तो किसके साथ कहाँ रहेंगे, आपका मोबाइल नंबर क्या होगा, आपके माता–पिता को जानकारी रहेगी। इसका विरोध हुआ, लेकिन जो माता–पिता हमें पढ़ाते हैं, परिश्रम करते हैं, पैसे देते हैं और जब पढ़–लिखकर बड़े हो जाते हैं, तैयार हो जाते हैं और तब भी माता–पिता चिंता करते हैं कि नहीं करते हैं? और लोग हमें मोबाइल दिलाते हैं, कमरा दिलाते है और हम पीछे–पीछे चले जाते हैं और बाद में क्या होगा यह आपको पता नहीं होता है। हम भटक जाते हैं किसी का बंगला दिखा दिया जाता है, किसी का फॉर्म हाउस दिखा दिया जाता है और बोलते हैं यह मेरा है। ध्यान रखिए मित्रो! पढ़िए, लिखिए और हर चीज को गोल्ड मेडल जैसी बनाइए। बस इतना ही मुझे कहना है। जो आपकी बेटियाँ गोल्ड मेडल जैसी एग्जाम दे सकें ऐसी चीज बनाइए। धन्यवाद।

श्रीमती आनंदीबेन पटेल

मा0 कुलाधिपति एवं श्री राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

नवम् दीक्षान्त समारोह में मुख्य अतिथि का अभिभाषण

परम आदरणीया कुलाधिपति सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, श्रीमती आनंदीबेन पटेल, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश; माननीया शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमती रजनी तिवारी; ऊर्जावान, कर्मठ एवं महामना मालवीय जी के त्यागपूर्ण संस्कारों से समृद्ध सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह; महात्मा बुद्ध के ज्ञान एवं सदुपदेशों से सिंचित कपिलवस्तु की पवित्र भूमि पर स्थित इस विश्वविद्यालय के सम्मानित शिक्षकगण; भारतवर्ष को एक सशक्त, समृद्ध एवं विकसित देश

बनाने की अपार क्षमता रखने वाले इस विश्वविद्यालय के प्रतिभावान छात्र–छात्राओ; इस विश्वविद्यालय को प्रदेश और देश का अग्रणी विश्वविद्यालय बनाने का संकल्प और उत्तरदायित्व निभाने वाले अधिकारियों और कर्मचारियो; आज के इस नवें दीक्षांत समारोह में उपाधियाँ और पदक प्राप्त करने वाले स्नातको; उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए अपना सर्वस्व निछावर करने वाले अभिभावको; सम्मानित अतिथिगण; प्रेस एवं मीडिया कर्मी; देवियो; सज्जनो और मित्रो।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के गौरवशाली अवसर पर सर्वप्रथम मैं उपाधियों एवं पदक प्राप्त करने वाले सभी स्नातकों और उनके अभिभावकों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ, उन्हें बधाई देता हूँ और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आने वाले समय में आप न केवल अपनी अपेक्षाओं और सपनों को पूरा करने में सफल हों, बल्कि अपने परिवार, समाज, विश्वविद्यालय, प्रदेश और देश की अपेक्षाओं और सपनों को भी पूरा कर सकें और सबका गौरव बढाएं। आने वाले समय में आप जितनी ऊँचाइयाँ छुएंगे, आपके विश्वविद्यालय का उतना ही सम्मान बढ़ेगा और पहचान बनेगी।

दीक्षांत समारोह एक पड़ाव है जहाँ शिक्षा और दीक्षा का अंत नहीं होता, बल्कि नए उत्तरदायित्वों का उदय होता है। यह वह समय है जब अपनी उपाधि लेने के उपरांत आप ये सोचते हैं कि मैं अपनी क्षमताओं और अर्जित ज्ञान का उपयोग अपने परिवार, समाज और देश के लिए कैसे कर सकता हूँ। जीवन की सार्थकता भी इसी में है कि हम अपनी क्षमताओं और ज्ञान का उपयोग अपने परिवार तथा समाज की समृद्धि और गौरव बढ़ाने के लिए कर सकें।

आज आपको जो उपाधियाँ दी गयी हैं उनमें आपकी ग्रेड्स और अंक प्रतिशत का भी उल्लेख होगा; परतु उसे आप अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व का आकलन समझने की भूल मत करिएगा। यह आपके व्यक्तित्व के एक पक्ष का ही मूल्यांकन है, पूरे व्यक्तित्व का नहीं। अतः जिनकी ग्रेड्स बहुत अच्छी नहीं है उन्हें अपने व्यक्तित्व के उन आयामों को पहचानने और निखारने की आवश्यकता है जिनमे वो अपने अन्य सहपाठियों से अच्छे हैं। परंतु हमारी परीक्षा प्रणाली उनका आकलन करने में सक्षम नहीं है। इसी के साथ–साथ जिनके ग्रेड्स अच्छे हैं वो भी स्मरण रखें कि यह मूल्यांकन उनके पूरे व्यक्तित्व का नहीं है। व्यक्तित्व के कुछ अन्य आयाम भी हैं जिनमें उन्हें सुधार की आवश्यकता हो सकती है। हमारी शिक्षा प्रणाली छात्रों की परस्पर सहयोग की भावना, सहानुभूति, त्याग, मैत्री, टीम–भावना, चरित्र, जीवन–मूल्य, समाज–सेवा, राष्ट्र–प्रेम, मानवीयता, नागरिक–कर्तव्य, स्वावलंबन, विषम परिस्थितियों और असफलताओं से सीखकर सँभलने की क्षमता, धैर्य, साहस, वीरता आदि गुणों का मूल्यांकन नहीं कर पाती जो कि किसी भी छात्र के व्यक्तित्व के लिए पुस्तकीय शिक्षा से कहीं अधिक महत्व रखते हैं।

मित्रो, आने वाला समय अवसरों के साथ साथ चुनौतियों से भी भरा होगा। आपको निरंतर विचार करते रहना होगा और योजनाएं बनानी होंगी कि आपकी व्यक्तिगत रुचियों और क्षमताओं के अनुरूप ऐसे कौन से अवसर हैं जिनके लिए आप स्वयं को और दक्ष और सक्षम बना सकते हैं। आज के तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में पुरानी विधाओं के महत्व कम हो रहे हैं और ज्ञान–विज्ञान के नए आयाम उदित हो रहे हैं, नए क्षितिज दिखाई पड़ रहे हैं। ऐसे परिदृश्य में आपको स्वयं को ज्ञान की नयी विधाओं में समृद्ध करना होगा और नये उभरते हुए अवसरों के लिए अपनी योग्यता प्रमाणित करनी होगी। इसके लिए आपको सतत शिक्षा और ज्ञान–विज्ञान की अनवरत साधना करते रहना पड़ेगा (continuous education, lifelong learning)। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी विद्यार्थियों को एक सम्पूर्ण एवं बहुआयामी व्यक्तित्व बनाने के लिए अंतर्विषयक एवं व्यावसायिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान के अवसर भी उपलब्ध कराती है। आज के तेजी से बदलते परिदृश्य में हमें अपनी learning, unlearning और relearning की क्षमताओं को बढ़ाना होगा।

शिक्षा और शिक्षण में इंटरनेट के आविर्भाव के बाद शोध और शिक्षण की प्रवृतियों में क्रांतिकारी परिवर्तन आ रहे हैं। निरंतर बढ़ती हुई online educational resources की उपलब्धता और ChatGPT आदि AI के tools से एक तरफ शिक्षा की उपलब्धता (access) बढ़ रही है वहीं परंपरागत क्लासरूम टीचिंग और शिक्षकों के लिए चुनौतियाँ भी पैदा हो रही हैं। इस प्रकार के तेजी से बदलते परिदृश्य में शिक्षकों को अपनी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए नये प्रयोग करने होंगे, नये तरीके खोजने होंगे।

हम सबने देखा है कि किस प्रकार पिछले कुछ दशकों में टाइपराइटर, कैमरा, वीडिओ कैसेट प्लेयर और रिकार्डर विलुप्त हो गए और कंप्यूटर का स्वरूप भी पूरी तरह बदल गया। नयी विधायें जैसे की Data Science, Artificial Intelligence, Robotics, Cyber Security, IoT, drone technology, Nanotechnology, quantum technology modern warfare के नये तरीके, Synthetic Biology, Regenerative medicine कृषि की उन्नत तकनीकें, जीनोम तथा बायोटेक्नॉलाजी पर आधारित पौधों और फसलों की नयी प्रजातियों का विकास आदि ने ज्ञान–विज्ञान के नये आयाम प्रस्तुत किए हैं। जहाँ एक तरफ ये तकनीकें रोजगार के नये अवसर उपलब्ध करा रही हैं और जीवन को सुगम बना रहीं हैं,वहीं हमारे जीवन को अभूतपूर्व ढँग से प्रभावित भी कर रही हैं। उदाहरणस्वरूप कंप्यूटरीकरण (computerization) ने आज बैंकिंग, रेल, हवाई और सड़क यात्रा, चिकित्सा और खेती आदि जीवन के तमाम क्षेत्रों को प्रभावित किया है। नये–नये प्रकार के Apps नित्य ही हमारे जीवन को सुगम बना रहे हैं। एक समय में जिस प्रकार कंप्यूटर को लेकर हमें डर था कि ये बरोजगारी की समस्या पैदा करेगा, आज AI को लेकर समाज में उससे भी कहीं अधिक भय व्याप्त है। लेकिन ज्ञान और विज्ञान के प्रवाह को हम रोक नहीं सकते। स्वयं को नयी विधाओं के ज्ञान से सुसज्जित करके ही हम इन चुनौतियों का मुकाबला कर सकते हैं और अपने लिए नये अवसरों का सृजन कर सकते हैं।

साथियो, ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में हमें ऐसा ज्ञान अर्जित करते रहना है जो हमारा आत्मविश्वास बढाए और हमें नये अवसरों के अनुकूल बनाये। ईश्वर ने हम सभी को अनन्य एवं विशिष्ट क्षमताओं से समृद्ध किया है, उन्हें पहचानना और उनका विकास करना ही हमारी प्रगति और सफलता की कुंजी है। जिन्होंने भी जीवन में अपने लक्ष्यों को पाने के लिए आसान रास्ते चुने, वे सफलता और शौर्य के उत्कर्ष तक नहीं पहुँच सके। परंतु जिन्होंने अपने लक्ष्यों को पाने के लिए मेहनत, लगन, त्याग, ईमानदारी, राष्ट्र एवं मानव प्रेम के रास्ते चुने, उन्होंने न केवल सफलता और शौर्य के उत्कर्ष को प्राप्त किया; बल्कि आने वाली कई पीढ़ियों तक वे प्रेरणा के स्रोत बने रहे।

जीवन का संघर्ष जब मुश्किल लगने लगे तो बिल गेट्स, स्टीव जॉब्स, जे. के. रोलिंग, अब्राहम लिंकन तथा नेल्सन मंडेला आदि की जीवनी (Biography) पढ़ लीजिएगा। डॉ अब्दुल कलाम, सचिन तेंदुलकर, महेंद्र सिंह धोनी, पंडित मदन मोहन मालवीय, लाल बहादुर शास्त्री और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के कड़े संघर्ष की कहानी भी पढ़ लीजिएगा। क्यूंकि मुश्किलों को झेलने की आदत कुछ समय बाद मुश्किलों से खेलने की आदत में तबदील हो जाती है। कड़े संघर्ष के बाद मिली हुई सफलता की संतुष्टि और आनंद अपने आप में विशिष्ट और अविस्मरणीय होता है। इन सभी महापुरुषों का जीवन हमें सत्यनिष्ठा, धैर्य, विनम्रता, त्याग जैसे चरित्र और जीवन के मूल्यों के महत्व को समझाता है।

इसके बाद जीवन में जब बहुत सारी सफलताएं और समृद्धि आ जाये और फिर भी जीवन में असंतोष हो तो महात्मा बुद्ध का जीवनवृत्त और उनके उपदेशों का स्मरण कर लीजिएगा। ऐसा करने से आपको इस बात का ज्ञान हो सकेगा कि मैं कौन हूँ और मेरे जीवन का वास्तविक उदेश्य क्या है। भारतीय ज्ञान–परंपरा हममें 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः' का विश्व–बंधुत्व का भाव जगाती है, हमें श्रेयस और प्रेयस के अंतर का बोध कराती है और जीवन में वह करने की प्रेरणा देती है जो हमारे लिए श्रेयस्कर है।

साथियों, आज इस अवसर पर मैं प्रो. कविता शाह जी के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहूँगा कि उन्होंने मुझे सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में सहभागिता का अवसर प्रदान किया है और मुझे महात्मा बुद्ध की क्रीड़ास्थली तथा सांख्य एवं योग दर्शन के जन्मदाता महान दार्शनिक महर्षि कपिल की पवित्र तपस्या–स्थली को प्रणाम करने का अवसर भी दिया है। बस्ती और सिद्धार्थनगर के अनेकों क्रांतिकारियों ने भारत के स्वतंत्रता–संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। काजी जलील अब्बासी, हबीबुल्लाह और भगवान दत्त जैसे नेताओं ने सत्याग्रह आंदोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया और एकजुट होकर आजादी की लड़ाई में अपना योगदान दिया। इस क्षेत्र के अनेकों क्रांतिकारियों की राष्ट्रप्रेम की मिसाल को भी मैं प्रणाम करता हूँ। आज महामहिम राज्यपाल उत्तर प्रदेश का सान्निध्य मिलना मेरे लिए गौरव का महत्वपूर्ण क्षण है। उनके चिंतन और मार्गदर्शन में उत्तरप्रदेश के सभी विश्वविद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता–सुधार में अच्छा प्रदर्शन कर रहे है। आज यहाँ व्यक्तिगत रूप से उनका आना इस बात को दर्शाता है कि प्रदेश में शिक्षा के सुधार के प्रति उनकी कितनी रुचि है और कितना समर्पण है। मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही सिद्धार्थ विश्वविद्यालय भी प्रो. कविता शाह जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बनाने में सफल होगा। व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए भी इस अवसर पर यहाँ आना एक भावनात्मक और अविस्मरणीय क्षण है, क्योंकि सिद्धार्थनगर और बस्ती की यह भूमि मेरे पितरों की जन्मभूमि और कर्मभूमि रही है, मैं उनकी पुण्य स्मृतियों को भी प्रणाम करता हूँ।

जिस प्रकार यहाँ के काला नमक चावल की खुशबू और उसका स्वाद सभी को आकर्षित और आनन्दित करता है उसी प्रकार यहाँ के शिक्षकों और

विद्यार्थियों के ज्ञान, चरित्र और जीवन मूल्यों की सुगंध सबको प्रभावित करती रहे, मेरी यही शुभकामना है।

अंत में मैं एक बार पुनः स्नातकों, उनके अभिभावकों और उनके शिक्षकों को बधाई देता हूँ और यह मंगलकामना करता हूँ कि माँ सरस्वती आप सभी की सफलता और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करें और आपके जीवन को सार्थक और सुखमय बनाये। जय भारत !

प्रो० अनिल कुमार त्रिपाठी (निदेशक)
भारतीय विज्ञान विभाग एवं अनुसंधान संस्थान, मोहाली

नवम् दीक्षान्त समारोह में विशिष्ट अतिथि का अभिभाषण

आज के इस सारस्वत समारोह में मंच पर उपस्थित उत्तर प्रदेश की श्री राज्यपाल और विश्वविद्यालय की कुलाधिपति माननीया आनन्दीबेन पटेल जी. मुख्य अतिथि प्रो० अनिल कुमार त्रिपाठी जी, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो० कविता शाह जी, कुलसचिव डॉ० दीनानाथ यादव जी. कार्यपरिषद के समस्त सम्मानित सदस्य, मेरे समक्ष बैठे हुए समस्त गणमान्य अतिथिजन, विद्या परिषद के सदस्यगण, विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं पदाधिकारीगण, उपस्थित समस्त शोधार्थी, विद्यार्थी उनके अभिभावकगण, मीडिया–जन एवं सज्जनो।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में यो तो मेरा एकाधिक बार आना हुआ है; परन्तु विश्वविद्यालय के इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण समारोह में आने का मुझे दूसरी बार अवसर मिला है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के इस नवम् दीक्षान्त समारोह में सम्मिलित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। दीक्षान्त समारोह प्रत्येक विश्वविद्यालय के लिए एक विशिष्ट आयोजन होता है। इसमें उपाधि प्राप्त करने वाले और सम्मानित होने वाले विद्यार्थियों को यह सदा–सदा के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव बन जाता है। इस दिन को इस क्षण को वे सगर्व जीवन–भर अपनी स्मृतियों में सँजोये रहते हैं। इस अवसर पर उस महत् प्रयोजन से उपस्थित समस्त छात्र–छात्राओं को मैं बधाई देती हूँ और साथ ही यह शुभकामना करती हूँ कि वे जीवन–भर इस उपलब्धि के इन पलों को याद रखेंगे, और अपनी शिक्षा को भी ताउम्र नहीं भूलेंगे, जो उन्होंने अपने अध्ययन काल में गुरुजनों से प्राप्त की है। शिक्षा के बाद यह दीक्षा का समय है और मैं आशा करती हूँ कि समस्त विद्यार्थी आगे जाकर अपने लिए चाहे जो कर्मक्षेत्र चुनें, उनके द्वारा ग्रहण की गई शिक्षा की छाप हर जगह, हर कार्य में दिखेगी।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय भगवान बुद्ध की पावन–स्थली पर अवस्थित है। भगवान बुद्ध का दिया गया यह सन्देश ही विश्वविद्यालय का ध्येय–वाक्य है– 'अत्त दीपो भव'। दीप स्वयं जलकर प्रकाश फैलाता है। मैं आशा करूँगी कि हमारे विद्यार्थी अपने को स्वयं तो ज्ञान से प्रकाशित करेंगे ही. अपने ज्ञान से और सत्कार्य से समाज और राष्ट्र को भी आलोकित करेंगे। अच्छी सोच लेकर यदि वे आगे बढ़ेगे तो राष्ट्र और समाज को भी अच्छा होना ही है। मेरा आज के लिए सन्देश है कि अच्छे बनो, सच्चे बनो, सशक्त बनो, समृद्ध बनो, देशभक्त बनो और यशस्वी हो।

माननीय राज्यपाल महोदया के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश के राज्य विश्वविद्यालयों ने बहुत प्रगति की है और नये–नये कीर्तिमान गढ़े हैं। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में भी उस ऊर्जा का संचार हुआ दिखता है। यह विश्वविद्यालय तीव्र गति से उन्नति–पथ पर गतिमान है। मैं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो० कविता शाह जी और उनकी टीम के रूप में विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकगण तथा अधिकारीगण को साधुवाद देती हूँ, इस उपलब्धिमय भव्य आयोजन के लिए। मुझे पूरा विश्वास है कि नवागत कुलपति के कार्यकाल में यह विश्वविद्यालय अपने उद्दिश्ट को प्राप्त करेगा और निकट भविष्य में प्रदेश और देश के अग्रणी विश्वविद्यालयों में अपना स्थान बनाने में सफल होगा। मेरी ओर से आज के दिन उपाधि और सम्मान प्राप्त करने वाले समस्त छात्र–छात्राओं, उनके परिजनो और गुरुजनों सहित विश्वविद्यालय परिवार को बहुत–बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्रीमती रजनी तिवारी
मा० राज्य मंत्री (उच्च शिक्षा), उत्तर प्रदेश

नवल वर्ष फिर आ रहा, नूतन लेकर चाह।
छोड़ पुरानी लीक को, चलो नयी अब राह।।
चलो नयी अब राह, प्रगति–पथ पर पग धारो।
बिगड़ गये जो काम, उन्हें इस साल सँभारो।
जो कुछ पाया विगत वर्ष में, उज्ज्वल सुखकर।
उससे ज्यादा दे जाये यह, नवल वर्ष फिर।।
–सम्पादक

नवम् दीक्षान्त समारोह में कुलपति जी का स्वागत भाषण एवं प्रगति आख्या

भगवान बुद्ध सभागार में उपस्थित सभी श्रेष्ठों को एवं सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की तपोभूमि को नमन करते हुए मैं अपनी वाणी माँ सरस्वती को समर्पित करती हूँ। इस नवम् दीक्षान्त समारोह की अध्यक्ष, हम सबकी अभिभावक माननीया कुलाधिपति, श्री राज्यपाल उत्तर प्रदेश श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी; मुख्य अतिथि आदरणीय प्रो० अनिल कुमार त्रिपाठी जी; विशिष्ट अतिथि माननीय राज्य मन्त्री, उच्च शिक्षा आदरणीया श्रीमती रजनी तिवारी जी; पूर्व कुलपति प्रो० रजनीकान्त पाण्डेय जी; पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं विधायक श्री माता प्रसाद पाण्डेय जी; क्षेत्र के माननीय सांसद श्री जगदम्बिका पाल जी; माननीय विधायक श्री श्याम धनी राही जी; शिक्षक विधायक श्री ध्रुव कुमार त्रिपाठी जी एवं उपस्थित अन्य समस्त माननीय विधायकगण; दीक्षांत सभा में उपस्थित माननीय जनप्रतिनिधिगण; विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद् एवं विद्यापरिषद् के सम्मानित सदस्यगण; छात्र–छात्राओं को स्वर्ण पदक देने वाले दाता–बन्धु; सम्माननीय अतिथिगण; विश्वविद्यालय के आत्मीय शिक्षक; बहनों–बन्धुओं; अधिकारी तथा कर्मचारीगण; प्रेस एवं मीडिया बन्धु; अभिभावक गण; उपाधि तथा पदक प्राप्त करने वाले प्रिय छात्र–छात्राओं, देवियों और सज्जनो!

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के नवम् दीक्षांत समारोह के अवसर पर मैं आप सभी का अपने एवं पूरे विश्वविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करती हूँ।

यह हम सभी के लिए बड़े ही हर्ष और आनंद का अवसर है कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के इस पावन, ऊर्जावान, स्वास्थ्यवर्धक, हरित परिसर में नवम् दीक्षान्त समारोह की अध्यक्ष, माननीय कुलाधिपति महोदया की गरिमामयी उपस्थिति इस दीक्षान्त मंच का गौरव है। आपका राष्ट्रप्रेम, आपकी रचनात्मकता और आपका कर्तव्यबोध हम सभी को प्रेरणा देने वाला है। दैवीय ऊर्जा से परिपूर्ण यह समूचा विश्वविद्यालय परिसर अपनी मार्गदर्शक कुलाधिपति, अपनी ऊर्जावान मुखिया को अपने बीच पाकर आह्लादित अनुभव कर रहा है। उच्च शिक्षा की भूमि उर्वर बनी रहे, इसके लिए आपकी प्रतिबद्धता हम सभी के लिए अनुकरणीय है। फलस्वरूप आपके कर्मठ और अनुशासित व्यक्तित्व की छत्र–छाया में न केवल हमारा विश्वविद्यालय, बल्कि उ० प्र० के सभी उच्च शिक्षण संस्थान निरंतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की ओर अग्रसर हैं।

कुलाधिपति के रूप में आपका सदैव यह प्रयास रहता है कि विश्वविद्यालयों में पठन–पाठन के स्वस्थ वातावरण के साथ–साथ विद्यार्थियों में स्वास्थ्य के साथ मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों का पोषण भी होता रहे। यह आपकी ही परिकल्पना है कि हम अपने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को इस रूप में सँवारने का प्रयास करते हैं कि वे आगे चलकर देश के सुयोग्य नागरिक व श्रेष्ठ मनुष्य के रूप में अपनी पहचान निर्मित करें।

आपके बहुमूल्य मार्गदर्शन में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय निरंतर प्रगति के नए आयाम की ओर बढ़ रहा है। जिन अपेक्षाओं के साथ प्रदेश सरकार द्वारा इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी थी, उन्हें पूरा करने की दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप एकीकृत पाठ्यक्रम के साथ शिक्षण और शोध दोनों ही क्षेत्रों में हमारा विश्वविद्यालय अपनी सशक्त पहचान बनाने के लिए संकल्पित है। आपके दिशा–निर्देशन में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय नैक मूल्यांकन हेतु अग्रसर है। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहती हूँ कि कुलपति के रूप में अपने समग्र दायित्वों को निभाने और सिद्धार्थ विश्वविद्यालय को वैश्विक पटल पर लाने का प्रयास मैं निरंतर करती रहूँगी।

इस नवम् दीक्षान्त समारोह में नव–स्नातकों को अपना शुभाशीष देने के लिए हमारे मध्य मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आदरणीय प्रो० अनिल कुमार त्रिपाठी जी का मैं और मेरे साथ पूरा विश्वविद्यालय परिवार हार्दिक अभिनंदन करता है। आप एक ख्यातिलब्ध वैज्ञानिक तथा वर्तमान में भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, मोहाली, पंजाब के निदेशक हैं। सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिनल एंड एरोमैटिक प्लांट्स, लखनऊ तथा इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी के डायरेक्टर के रूप में भी आपने अपनी बहुमूल्य सेवाएं दी हैं। ये बताते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि लगभग चार दशकों से आपने विज्ञान शिक्षण व शोध तथा प्रशासनिक दायित्वों को बखूबी निभाया है। आपके 90 से अधिक शोधपत्र प्रतिष्ठित जर्नल्स में प्रकाशित हैं और आप विद्यार्थियों व शोधार्थियों में वैज्ञानिक अभिरुचि को विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य निरंतर कर रहे हैं। ऐसे सरल, सहज, बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व के द्वारा दिया जाने वाला दीक्षान्त भाषण हमारे स्नातकों के लिए प्रेरणास्पद होगा और निश्चय ही एक नयी ऊर्जा के साथ वे अपने जीवन के अग्रिम सोपान में प्रवेश करेंगे। विश्वविद्यालय के नवम् दीक्षांत समारोह के अवसर पर मैं विशिष्ट अतिथि उच्च

शिक्षा राज्य मन्त्री आदरणीय श्रीमती रजनी तिवारी जी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करती हूँ। हम सौभाग्यशाली हैं कि आपने यहाँ आकर इस समारोह की शोभा में श्रीवृद्धि की है।

यह मेरा सौभाग्य है कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्नयन की मजबूत आधारशिला रखने में योगदान देने को सुअवसर मुझे कुलगुरु के रुप में प्राप्त है। तराई क्षेत्र के चार जनपदों सिद्धार्थनगर, बस्ती, संत कबीरनगर, महराजगंज की व्यापक परिधि में 265 महाविद्यालयों को समेटे इस विश्वविद्यालय की स्थापना कार्तिक कृष्ण एकादशी, संवत् 2072 को हुई थी। तब से अब तक सिद्धार्थ विश्वविद्यालय ने निरंतर एक दशक– उत्कृष्टता, नवाचार और विश्वास के साथ करते हुए पूर्ण किया है तथा प्रगति के अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

महोदया, गत एक वर्ष 2024–25 सत्र में विश्वविद्यालय ने जो उपलब्धियाँ अर्जित की हैं, उसकी आख्या आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रही हूँ :

- पूर्व वर्ष में 5 जिलों में कुल प्रवेश 46,410 हुए एवं इस वर्ष कुल प्रवेश 79,004 हुए, जो कि पूर्व वर्ष की अपेक्षा 70.23 प्रतिशत अधिक है।
- सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु संगीत एवं चित्रकला विभाग इस सत्र से प्रारम्भ हो गया है।
- इस क्षेत्र के युवक पुलिस, डिफेंस तथा एडमिनिस्ट्रेटिव जॉब्स की ओर ज्यादा उन्मुख हैं। इसी क्रम में एनसीसी को इस सत्र से ऐच्छिक विषय के रूप में मुख्य पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है।
- पी. एम. उषा से अनुदानित सेंट्रल इंस्ट्रूमेंटेशन लैब की स्थापना भी विश्वविद्यालय में की गई है जो पूर्ण रूप से क्रियाशील है। इसी क्रम में बताना है कि पुनः इस वर्ष पी० एम० ऊषा से 13.5 करोड़ का अनुदान विश्वविद्यालय को लेक्चर थिएटर कॉम्प्लेक्स एवं कला संकाय को विस्तारीकरण के लिए प्राप्त हुआ है।
- कॉरपोरेट सोशल रेस्पांसबिलिटी के अंतर्गत स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के सौजन्य से परिसर में दो ओपन जिम की स्थापना की गयी है जिसका लाभ शिक्षक, कर्मचारी, छात्र–छात्राएं सभी लेंगे।
- विश्वविद्यालय में इंटरनेशनल हॉस्टल का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है।
- विश्वविद्यालय एवं उससे सम्बन्धित समस्त महाविद्यालय पूर्ण रूप से समर्थ पोर्टल के माध्यम से कार्य कर रहे हैं।
- विश्वविद्यालय का पुस्तकालय वर्तमान में 57,626 पुस्तकों के साथ ई–लाइब्रेरी तथा दिव्यांग छात्र–छात्राओं हेतु सुविधा से युक्त है। यह सभी विद्यार्थियों के लिए पुस्तकें पढ़ने और ज्ञानार्जन करने का बेहतर अवसर है।
- विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य केन्द्र में डॉक्टर्स हैं, जिससे चिकित्सीय सुविधा परिसर में उपलब्ध है। छात्र–छात्राओं, शिक्षकों व कर्मचारियों का समय–समय पर बीएमआई टेस्ट एवं नेत्र परीक्षण भी कराया गया है। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि जिला प्रशासन से सामंजस्य स्थापित कर विश्वविद्यालय के हेल्थ सेंटर में एम्बुलेंस की व्यवस्था भी की जा चुकी है।
- यह पूरे विश्वविद्यालय के लिए बड़ा ही सुखद है कि विश्वविद्यालय द्वारा प्रथम बार अपना स्थापना दिवस बड़े ही धूमधाम से सिद्धार्थोत्सव के रूप में मनाया गया है, जो छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक पहल है। इस सिद्धार्थोत्सव में अनेक प्रकार के कार्यक्रम व प्रतियोगिताएं सम्पन्न कराई गईं। पुस्तक प्रदर्शनी, हस्त शिल्प प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफी, डॉक्युमेंट्री, परिधान प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक, कवि सम्मेलन, मुशायरा, खेलकूद आदि आयोजित किए गये, जिनमें हमारे शिक्षकों, विद्यार्थियों, कर्मचारियों ने बड़े ही उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया।
- इसके साथ ही आपके निर्देशानुसार दीक्षांत सप्ताह के अंतर्गत भाषण, चित्रकला, निबंध, रंगोली, लोगो डिजाइनिंग, काव्य–लेखन, देशभक्ति–गीत गायन, लोक–नृत्य आदि प्रतियोगिताएं छात्र–छात्राओं के मध्य सम्पन्न करायी गईं। गोद लिए गए पाँच गाँवों में परंपरागत खेलों के आयोजन के साथ ही प्राथमिक से इंटरमीडिएट तक के विद्यालयों में चित्रकला, कहानी–कथन आदि तथा आँगनबाड़ी केन्द्रों पर सफाई जागरूकता से संबन्धित प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।
- शिक्षको एवं शोधार्थियों को कुल रु0 3,59,27,765 के रिसर्च प्रोजेक्ट प्राप्त हुए।
- 17 शिक्षक World Global Faculty में सम्मिलित हैं।
- सत्र 2024–25 में कुल 229 प्रकाशन हुए, जो पिछले वर्ष से संख्या में 62 एवं प्रतिशत में 37 प्रतिशत अधिक हैं।
- विश्वविद्यालय के डॉ० आशुतोष श्रीवास्तव को Linnean Society of Londan का Fellow बनाया गया है जो विश्वविद्यालय की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा बढ़ाता है।
- Q S IGage में Gold की rating के साथ अंतर्राष्ट्रीय पटल पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय ने पहला कदम रख दिया है।
- सत्र 2024–25 में कुल 14 MoU हुए जिनमें 2 MoU अन्तर्राष्ट्रीय स्तर एवं 4 MoU Industry based organization के साथ हुए हैं। इनमें विश्वविद्यालय द्वारा सिद्धार्थनगर जिला प्रशासन के साथ MoU प्रमुख है। South Asia Publication, Nepal; Rajarshi Janak University, Nepal व विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से MoU किए गए हैं जिससे विश्वविद्यालय की प्रगति को नए आयाम मिलेंगे।
- यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व और उल्लास का क्षण है कि निधियन के अंतर्गत पिछले वर्ष दिये गए नौ स्वर्ण पदकों के अतिरिक्त समाज के प्रबुद्ध नागरिकों द्वारा इस वर्ष दो और नए स्वर्ण पदक हमारे विद्यार्थियों को दिये जा रहे हैं।
- उत्तर प्रदेश शासन द्वारा संचालित मिशन शक्ति फेज–5 के अंतर्गत विश्वविद्यालय में महिला सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं अधिकारों को लेकर अनेक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जाना एक सार्थक कदम है जो हमारी बच्चियों व महिलाओं के विकास के लिए अति आवश्यक है।
- आपकी प्रेरणा से विश्वविद्यालय में चन्दन वाटिका व पदुमा सरोवर तैयार हो गया है, जो पर्यावरणीय दृष्टि से बहुत ही सुखद है और विश्वविद्यालय के वातावरण को और अधिक Ecofriendly Campus बनाता है।
- विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले इंटरनेशनल स्टूडेंट्स की अलग से काउंसिलिंग की गयी है ताकि भारत–नेपाल अवरोध के बीच उन्हें किसी तरह की परेशानी न हो।
- कला, विज्ञान व वाणिज्य तीनों संकायों में विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पूर्ण रूप लागू है। स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पी० एच० डी० स्तर पर पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं।
- आपको बताते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि आज के इस नवम दीक्षान्त समारोह में हम स्नातक, स्नातकोत्तर उत्तीर्ण कुल 53,986 छात्र–छात्राओं को उपाधियाँ प्रदान कर रहे हैं, जिसमें 20,304 छात्र एवं 33,682 छात्राएं है। विभिन्न विषयों में प्रदान की जाने वाली 32 शोध उपाधियों में 23 छात्र और 9 छात्राएं हैं। यह इस ओर इंगित करता है कि क्षेत्र बदल रहा है, विश्वविद्यालय बढ़ रहा है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के यहाँ होने से बेटियों की शिक्षा के प्रति क्षेत्रीय सोच के बदलते रुझान में विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान है जो इस प्रदेश की महती आवश्यकता है। दीक्षान्त समारोह में दिए जाने वाले 48 स्वर्ण पदको में से 32 छात्राएं और 5 छात्र प्राप्तकर्ता हैं अर्थात् 86 प्रतिशत पदकों पर बेटियों ने अपना स्थान बनाया है।
- CSR Initiative of Petronet LNG Limited (PLL), New Delhi Advanced Life Support Ambulance Wockhardt Foundation के सौजन्य से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय को इस माह प्राप्त होगी।

मैं अपने विद्यार्थियों से कहना चाहती हूँ कि सकारात्मकता, संस्कार, परिश्रम, ईमानदारी और सुंदर संकल्प से ही जीवन में शुभता आती है। आप अपनी जड़ों से विश्वविद्यालय से जुड़े रहें। आप सभी के जीवन में उस शुभता का आगमन सदैव होता रहे, ऐसी शुभकामनाएँ देती हूँ। आपने जो कुछ भी विद्या के इस मंदिर में सीखा है, उससे आप देश और समाज के उत्थान का एक माध्यम बनें। आपकी ऊर्जा, आपका उत्साह आपको सकारात्मकता की ओर लेकर जाये। आप सब जीवन–पथ पर उन्नति को प्राप्त हों तथा विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाएं।

भगवान बुद्ध के त्याग, धैर्य और संयम से सींची गयी इस धरती से दीक्षित होकर आपकी सोच और आपके कर्म भी उर्वर हुए होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। हमारे वेदों की ऋचाओं में हमारा जो सांस्कृतिक उत्कर्ष संरक्षित

है, उसे आत्मसात करते हुए यह आवश्यक है कि हम अपनी भारत–भूमि के उस अमूल्य सांस्कृतिक गौरव की थाती को आने वाली पीढ़ी को सौंपें, जिसमें सम्पूर्ण विश्व के लिए करुणा, प्रेम, क्षमाशीलता के साथ–साथ निर्भयता और साहस का भाव भी निहित है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय सतत प्रयत्नशील है कि हम अपने विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के साथ–साथ एक अनुशासित और संस्कारयुक्त वातावरण दे सकें, जिससे उनका चरित्र निर्माण हो सके। इसके साथ ही इस पूरे परिक्षेत्र से जुड़ना ओर यहाँ ही विशेषताओं को विश्व के मानचित्र पर लेकर आना भी हमारा लक्ष्य है। 'बुद्धस्य नैवेद्यम्' इसी लक्ष्य की ओर बढ़ाया गया एक सशक्त कदम है। दीक्षा के इस पावन पर्व में मैं अपने प्रिय विद्यार्थियों को यह शुभकामना देना चाहूँगी कि आप सभी सकारात्मक ऊर्जा और आत्मबल से संपृक्त हों। आपके भीतर असीम संभावनाएँ हैं। दीक्षा का यह पर्व आपकी संभावनाओं को उड़ान दे सके, ऐसी अभिलाषा करती हूँ। भगवान बुद्ध की करुणा और ज्ञान का आलोक आपके भीतर व्याप्त हो और अपनी शिक्षा व कौशल के बल पर आप पूरे राष्ट्र को गौरवान्वित अनुभव कराएँ, ऐसी मेरी इच्छा है और शुभकामना भी।

''अप्राप्य नाम नेहास्ति धीरस्य व्यवसायिनः''

अर्थात धैर्य और लगन वाले व्यक्ति के लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं है और मुझे पूरा विश्वास है अपनी दीक्षा और विवेक से आप कठिन से कठिनतर लक्ष्य को भी प्राप्त करेंगे।

भगवान तथागत की इस पावन क्रीड़ास्थली से एक बार पुनः आप सभी अतिथियों, महानुभावों को नवम् दीक्षान्त समारोह की बधाई देते हुए गोपालदास नीरज जी की कुछ पंक्तियों समर्पित करती हूँ–

''मत डर प्रलय झकोरों से तू
बढ़ आशा हलकोरों से तू
क्षण में यह अरि दल मिट जायेगा तेरे पंखों से पिसकर
खग! उड़ते रहना जीवन भर ।।''
खग! उड़ते रहना जीवन भर ।

जय हिन्द! जय भारत !

प्रो. कविता शाह (कुलपति)
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुआ डॉ. सौम्या विनयन का व्याख्यान

'काला नमक धान' पर मूल्य–सृजन एवं व्यापारिक संभावनाओं पर चर्चा

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के प्रबंधन अध्ययन विभाग में दिनांक 11 नवम्बर 2025 को डॉ. सौम्या विनयन, Assistant Professor,Council for Social Development (CSD), हैदराबाद द्वारा 'काला नमक धान और उससे जुड़े मूल्य–सृजन, उत्पादन, परिवहन एवं GI VSx की महत्ता' विषय पर एक प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान आयोजित किया गया।

डॉ. विनयन ने अपने दीर्घकालिक शोध कार्यों का उल्लेख करते हुए बताया कि भौगोलिक संकेत (Geographical Indications) जैसे GI VSx ग्रामीण उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने में सहायक हैं।उन्होंने अपने अध्ययन Regional Products and Rural Livelihoods के उदाहरणों के माध्यम से समझाया कि कैसे स्थानीय संसाधन, कृषि परंपराएँ और विपणन रणनीतियाँ मिलकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बना सकती हैं। उन्होंने काला नमक धान को "पूर्वांचल की सांस्कृतिक पहचान और संभावित आर्थिक अवसर" के रूप में रेखांकित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वाणिज्य संकाय के अधिष्ठाता तथा प्रबन्धन अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. सौरभ ने की। उन्होंने अपने संबोधन में बताया कि यदि काला नमक धान की खेती में वैज्ञानिक तकनीकों, मूल्य–संवर्धन (value addition), उचित परिवहन एवं ब्रांडिंग पर विशेष ध्यान दिया जाए तो यह क्षेत्रीय स्तर पर एग्रो–प्रेन्योरशिप (Agro&Entrepreneurship) को बढ़ावा दे सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रबंधन के विद्यार्थी इस दिशा में स्टार्टअप्स और वैल्यू चेन डेवलपमेंट के माध्यम से सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

सत्र के दौरान छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और डॉ. विनयन से कई महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे, जिनके उन्होंने अत्यंत सरल और व्यावहारिक उत्तर दिये। उनके सतत मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय के अनेक छात्र शोध और प्रोजेक्ट कार्य में सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं, जिनमें दीपक कुमार वर्मा भी शामिल हैं, जिन्होंने पूर्व में कई सेमिनारों एवं सम्मेलनों में विभाग का प्रतिनिधित्व किया है।

कार्यक्रम के अन्त में धन्यवाद–ज्ञापन डॉ. कहकशा खान, सहायक आचार्य, प्रबंधन अध्ययन विभाग ने किया। इस अवसर पर डॉ. दीपक जायसवाल, श्रेष्ठा श्रीवास्तव एवं आलोक पांडेय सहित विभाग के अन्य संकाय सदस्य भी उपस्थित रहे।

यह सत्र छात्रों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक, संवादात्मक एवं व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी सिद्ध हुआ, जिसमें काला नमक धान को केवल एक कृषि उत्पाद नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक विरासत एवं आर्थिक संभावना के रूप में देखने की प्रेरणा मिली।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में 'काला नमक' पर चर्चा

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के प्रबंधन अध्ययन विभाग (Department of Management Studies) में दिनांक 12 नवम्बर 2025 को दिव्यम आहार प्रा. लि. के निदेशक श्री दिलीप चौहान का "सिद्धार्थनगर में सतत आजीविका के अवसर सृजन" विषय पर एक प्रेरक एवं व्यावहारिक व्याख्यान आयोजित किया गया।

श्री चौहान ने अपने व्याख्यान में विशेष रूप से 'काला नमक' धान के उत्पादन, विपणन एवं मूल्य–संवर्धन (Value Addition) पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने बताया कि यह पारंपरिक धान न केवल पूर्वांचल की सांस्कृतिक पहचान है, बल्कि यदि उचित विपणन, पैकेजिंग एवं ब्रांडिंग रणनीतियाँ अपनाई जाएँ तो यह क्षेत्रीय स्तर पर ग्रामीण उद्यमिता (Rural Entrepreneurship) और सतत आजीविका (Sustainable Livelihood) के नए आयाम खोल सकता है।

अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने बताया कि उनकी कंपनी "दिव्यम आहार प्रा. लि." वर्तमान में काला नमक चावल के संरक्षण, प्रसंस्करण एवं बाजार–विस्तार की दिशा में कार्यरत है। उन्होंने एमबीए विद्यार्थियों को अपनी कंपनी से प्रशिक्षण और प्रोजेक्ट कार्यों में जुड़ने का आमंत्रण भी दिया, ताकि वे ग्रामीण उत्पादों की मूल्य श्रृंखला (Value Chain) और विपणन–व्यवहार को निकट से समझ सकें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सौरभ, अधिष्ठाता, वाणिज्य संकाय एवं एमबीए विभागाध्यक्ष ने की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि "काला नमक चावल जैसे स्थानीय उत्पाद क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को नयी दिशा दे सकते हैं, यदि उनमें नवाचार, गुणवत्ता–नियंत्रण एवं ब्रांड–विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाए।"सत्र के समापन पर प्रो. सौरभ ने अतिथि वक्ता श्री दिलीप चौहान का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया और उनके विचारों को विद्यार्थियों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक बताया। इस अवसर पर 'डॉ. दीपक जायसवाल, सहायक आचार्य (एमबीए विभाग), डॉ. कहकशा खान, सहायक आचार्य (एमबीए विभाग) तथा विभाग के अन्य संकाय सदस्य एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

सत्र के अंत में विद्यार्थियों ने विविध प्रश्न पूछे जिनका श्री चौहान ने व्यवहारिक उदाहरणों सहित उत्तर दिया। व्याख्यान अत्यंत संवादात्मक एवं प्रेरणादायक रहा, जिसने छात्रों को स्थानीय संसाधनों के माध्यम से उद्यमिता विकास, रोजगार सृजन और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित किया।

एम. बी. ए. विभाग में वर्कशॉप आयोजित

18 नवंबर 2025 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के प्रबंधन अध्ययन विभाग (MBA) द्वारा आयोजित "सिक्योरिटी विश्लेषण एवं पोर्टफोलियो प्रबंधन" वर्कशॉप में छात्र–छात्राओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर श्री शिवम सिंह, असिस्टेंट मैनेजर, रिस्क मैनेजमेंट, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज ने छात्रों को वास्तविक बाजार के उदाहरणों के माध्यम से निवेश, पोर्टफोलियो निर्माण और जोखिम प्रबंधन की जानकारी दी।

कार्यक्रम में वाणिज्य संकाय के डीन एवं प्रबंधन शास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो. सौरभ, , डॉ. कहकशां खान, असिस्टेंट प्रोफेसर और श्री आलोक पांडेय, श्रेष्ठा श्रीवास्तव और अन्य फैकल्टी मेंबर्स उपस्थित रहे और छात्रों का मार्गदर्शन किया।

छात्रों ने वित्तीय संकट, CDO, CMO और विभिन्न निवेश–विकल्पों पर गहन चर्चा की। छात्रों ने सक्रिय भागीदारी करते हुए प्रायोगिक गतिविधियों में हिस्सा लिया। वर्कशॉप ने छात्रों को सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान दोनों प्रदान किए।

छात्रों ने कहा कि इस वर्कशॉप से उन्हें निवेश और वित्तीय प्रबंधन की वास्तविक समझ मिली और भविष्य में उनके करियर के लिए यह बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

वाणिज्य विभाग में छात्र का सम्मान

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु के वाणिज्य विभाग के भूतपूर्व छात्र सलमान ने चार्टर्ड एकाउंटेंट (C.A.) की प्रतिष्ठित परीक्षा वर्ष 2025 में उत्तीर्ण कर विश्वविद्यालय एवं क्षेत्र का नाम गौरवान्वित किया है। इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवम्बर 2025 को विश्वविद्यालय परिसर में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान अपने प्रेरक संबोधन में सलमान ने कहा कि "किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति, निरंतर प्रयास और शिक्षकों के साथ सतत संवाद अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि वर्तमान समय में क्षेत्रीय सीमाएँ सफलता में बाधक नहीं हैं। यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और नीयत मजबूत हो, तो सिद्धार्थनगर जैसे पिछड़े क्षेत्र में रहकर भी राष्ट्रीय स्तर की उपलब्धि हासिल की जा सकती है।

सलमान मूल रूप से अलीगढ़वा के निकटवर्ती क्षेत्र से हैं और सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के वाणिज्य संकाय के गौरवमय पूर्व विद्यार्थी रहे हैं।

इस अवसर पर वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष एवं पूर्व संकायाध्यक्ष प्रो. दीपक बाबू ने सलमान की उपलब्धि की सराहना करते हुए कहा कि उनकी सफलता विभाग के विद्यार्थियों के लिए निरंतर प्रेरणा का स्रोत रहेगी। उन्होंने कहा कि ग्रामीण अंचल के विद्यार्थी भी अपने ज्ञान, कौशल एवं ईमानदार प्रयास से उच्चतम उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से यह भी आह्वान किया कि वे केवल रोजगार प्राप्त करने तक सीमित न रहें, बल्कि आगे चलकर रोजगार सृजनकर्ता भी बनें, जिससे भारत के विकास एवं उत्पादन वृद्धि में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका सुनिश्चित हो सके।

कार्यक्रम में डॉ. दिनेश प्रसाद सहित वाणिज्य विभाग के शिक्षक एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में 'सिक्योरिटी एनालिसिस एवं पोर्टफोलियो मैनेजमेंट' विषयक पाँच दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के प्रबंधन अध्ययन विभाग (एमबीए) में 17 से 21 नवम्बर 2025 तक आयोजित पाँच दिवसीय कार्यशाला का सफलतापूर्वक समापन हुआ। यह कार्यशाला वित्तीय बाजार की जटिलताओं, जोखिम प्रबंधन, तकनीकी व मूलभूत विश्लेषण तथा पोर्टफोलियो निर्माण की प्रक्रिया को सरल और व्यावहारिक रूप से समझाने के उद्देश्य से आयोजित की गई थी।

पूरे पाँच दिनों तक प्रशिक्षण सत्रों का संचालन श्री शिवम सिंह, सहायक प्रबंधक (जोखिम प्रबंधन), बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) द्वारा किया गया। उन्होंने विद्यार्थियों को वास्तविक बाजार परिस्थितियों पर आधारित व्यावहारिक ज्ञान, जोखिम विश्लेषण की विधियाँ तथा निवेश निर्णय लेने की प्रक्रिया से अवगत कराया।

कार्यशाला के सफल आयोजन पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति महोदया ने विभाग को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। उन्होंने कहा कि ऐसी कार्यशालाएँ विद्यार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान प्रदान कर उन्हें उद्योगोन्मुखी बनाती हैं। कुलपति महोदया ने आयोजन समिति के उत्कृष्ट प्रयासों की सराहना करते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियों के आयोजन हेतु प्रेरित किया।

कार्यशाला के आयोजन में प्रोफेसर सौरभ, विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, वाणिज्य संकाय का प्रभावी नेतृत्व एवं दिशा–निर्देशन रहा। प्रबंधन शास्त्र विभाग के प्रमुख के रूप में उनका मार्गदर्शन विभाग को निरंतर नई शैक्षणिक ऊँचाइयों तक ले जा रहा है।

इस पाँच दिवसीय आयोजन की आयोजन सचिव डॉ. कहकशां खान ने अपनी शैक्षणिक दक्षता, समन्वय–कौशल और दक्ष नेतृत्व से कार्यशाला को अत्यंत सुव्यवस्थित व सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया। सह आयोजन–सचिव श्री आलोक पांडेय का सहयोग भी उल्लेखनीय रहा, जिन्होंने पूरे कार्यक्रम में अपना सक्रिय योगदान दिया।

कार्यशाला में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया और वित्तीय बाजार में करियर निर्माण से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कीं। विभाग द्वारा ऐसे शैक्षणिक कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को उद्योग–अनुकूल बनाने की दिशा में सकारात्मक प्रयास जारी हैं।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में मना एनसीसी दिवस

दिनांक 21.11.2025 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स द्वारा एनसीसी दिवस मनाया गया। एनसीसी कैडेट्स ने इस अवसर पर कैंपस में साफ–सफाई की। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के चिकित्सक डॉ अरुण द्विवेदी और डॉ ज्ञान प्रकाश श्रीवास्तव ने कैडेट्स को स्वयं की स्वच्छता के महत्व को बताते हुए इसके अभाव में होने वाली बीमारियों पर भी प्रकाश डाला। एनसीसी दिवस के अवसर पर एनसीसी के कैडेट कुशल त्रिपाठी और सांभवी चौधरी ने एनसीसी के गौरव पूर्ण इतिहास और कैडेट्स के विकास में एनसीसी की भूमिका पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के अंत में एनसीसी के ए. एन. ओ. डॉ. प्रज्ञेश नाथ त्रिपाठी ने कैडेट्स को राष्ट्र के प्रति समर्पित होने और कैडेट्स की भूमिका को बताया और किस प्रकार एनसीसी कैडेट्स न केवल अपना बल्कि पूरे समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। कार्यक्रम के अंत में सीनियर अंडर ऑफिसर कैडेट नागेंद्र यादव ने सभी को धन्यवाद दिया। इस कार्यक्रम ने एनसीसी के कैडेट्स व कर्मचारी उपस्थिति रहे।

संविधान दिवस पर शपथ–ग्रहण एवं व्याख्यान का सफल आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा दिनांक 26 नवंबर 2025 को, संविधान दिवस के उपलक्ष्य में एक गरिमामय शपथ–ग्रहण समारोह एवं व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह आयोजन संविधान के महत्व और राष्ट्र निर्माण में इसकी भूमिका को रेखांकित करने के उद्देश्य से किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कला संकाय की अध्यक्षप्रो. नीता यादव ने की, जिन्होंने अपने प्रेरक उद्बोधन में छात्रों को संविधान में निहित मौलिक कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लोक प्रशासन विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुनीता त्रिपाठी उपस्थित रहीं। उन्होंने 'भारतीय संविधान : युवाओं की भूमिका' विषय पर एक सारगर्भित व्याख्यान दिया और कहा कि संविधान सिर्फ एक दस्तावेज नहीं, बल्कि देश के नागरिकों की सामूहिक इच्छाशक्ति का प्रतीक है।

विशिष्ट अतिथि के तौर पर डॉ. रविकांत शुक्ला, सहायक प्राध्यापक, लोक प्रशासन विभाग, ने संविधान की प्रस्तावना में निहित आदर्शों पर प्रकाश डाला और सभी उपस्थित लोगों को संविधान के प्रति सच्ची निष्ठा रखने की शपथ दिलाई।

इस महत्वपूर्ण आयोजन में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के अध्यक्ष एवं सहायक प्राध्यापकगण ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उपस्थित प्रमुख सदस्यों में प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे, डॉ. विशाल

गुप्ता, डॉ. हृदयकांत पांडेय, डॉ. वंदना गुप्ता, डॉ. मयंक कुशवाहा, डॉ. सत्यम मिश्रा एवं अजीत कुमार आदि शामिल थे। इन सभी ने संविधान के मूल्यों को आत्मसात करने पर जोर दिया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के छात्र–छात्राओं की सक्रिय और उत्साहपूर्ण उपस्थिति रही। छात्र–छात्राओं ने संविधान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए संविधान की मूल भावना को जन–जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया।

राजनीति विज्ञान विभाग की प्रभारी डॉ. सरिता सिंह ने अंत में सभी अतिथियों और प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया, और इस संकल्प के साथ कार्यक्रम का समापन किया कि वे भविष्य में भी संविधान के उच्च आदर्शों को बनाए रखने की दिशा में काम करती रहेंगे।

सामूहिक राष्ट्रगीत गायन कार्यक्रम सम्पन्न

कुलाधिपति एवं राज्यपाल के निर्देश के क्रम तथा कुलपति प्रो कविता शाह के मार्गदर्शन में राष्ट्रगीत "वंदेमातरम" के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 7 नवम्बर, 2025 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, सिद्धार्थनगर के गौतम बुद्ध प्रेक्षागृह में सामूहिक राष्ट्रगीत गायन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी संकायों के विद्यार्थी, शिक्षकगण एवं कर्मचारीगण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और सभी ने एक स्वर में राष्ट्रगीत का गर्वपूर्ण एवं सामूहिक गायन कर देशभक्ति की भावना को प्रकट किया।

इस अवसर पर महिला अध्ययन केंद्र की समन्वयक एवं अधिष्ठाता छात्र–कल्याण प्रो. नीता यादव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रगीत 'वंदेमातरम्' के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा इसके 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर को पूरे देश में भव्य रूप से मनाए जाने का निर्णय लिया गया है। यह कार्यक्रम चार चरणों में आयोजित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रथम चरण, जो 7 नवम्बर से 14 नवम्बर, 2025 तक आयोजित किया जाएगा, के अंतर्गत विश्वविद्यालय परिसर में प्रतिदिन प्रातः 10 बजे सामूहिक राष्ट्रगीत गायन किया जाएगा।

प्रो. नीता यादव ने आगे कहा कि राष्ट्रगीत केवल एक गीत नहीं, बल्कि यह भारत की आत्मा, स्वाभिमान और सांस्कृतिक अस्मिता का जीवंत प्रतीक है। 'वंदेमातरम्' हमें राष्ट्रभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा और अखंड एकता का संदेश देता है। युवा पीढ़ी में राष्ट्रभावना को जागृत एवं सुदृढ़ करना ही इस सामूहिक गायन कार्यक्रम का मूल उद्देश्य है।

कार्यक्रम का संयोजन प्रो. सौरभ (निदेशक, आइक्यूएसी) तथा संचालन डॉ. शिवम शुक्ला ने किया। संगोष्ठी में जिले के शिक्षकों व विद्यार्थियों की बड़ी संख्या में सक्रिय भागीदारी रही।

नवम् दीक्षांत समारोह के सन्दर्भ में कुलपति प्रो. कविता शाह की प्रेस–वार्ता

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में 10 नवंबर, 2025 को आयोजित होने वाले नवम् दीक्षांत समारोह की तैयारियों एवं कार्यक्रम की रूपरेखा की जानकारी देने हेतु कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने विश्वविद्यालय परिसर में प्रेस वार्ता आयोजित की।

प्रेस वार्ता में कुलपति प्रो. शाह ने कहा कि दीक्षांत समारोह किसी भी शिक्षण संस्थान के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं गरिमामय अवसर होता है। यही वह क्षण है जब विद्यार्थियों को उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों का औपचारिक रूप से सम्मान मिलता है तथा वे विश्वविद्यालय की शिक्षण–परंपरा और सामाजिक दायित्वों को आगे बढ़ाने का संकल्प लेते हैं। उन्होंने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय सदैव उच्च शिक्षा के मानकों तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों को सर्वोपरि रखते हुए अपने विद्यार्थियों को नैतिक, बौद्धिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों से संपन्न बनाने का प्रयास करता रहा है।

प्रो. शाह ने बताया कि नवम् दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय की कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल करेंगी। समारोह में मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित शिक्षाविद् एवं भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (IISER), मोहाली, पंजाब के निदेशक प्रोफेसर अनिल कुमार त्रिपाठी होंगे। अति विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री श्री योगेंद्र उपाध्याय उपस्थित होंगे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार की शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती रजनी तिवारी उपस्थित होंगी।

कुलपति ने बताया कि माननीय राज्यपाल 10 नवंबर को विश्वविद्यालय आगमन के उपरांत नवम दीक्षांत समारोह में सहभागी होंगी तथा मुख्य

नवनिर्मित द्वार के समक्ष स्थापित महात्मा गौतम बुद्ध की सौम्य प्रतिमा का अनावरण करेंगी। इसके साथ ही विश्वविद्यालय परिसर में विकसित चंदन वाटिका, पद्म सरोवर एवं ओपन जिम का लोकार्पण भी माननीय कुलाधिपति द्वारा किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए ग्रामों के छात्र–छात्राओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। इन प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को माननीय कुलाधिपति के कर–कमलों से प्रमाणपत्र प्रदान किए जाएंगे। आँगनवाड़ी के बच्चों द्वारा पर्यावरण विषयक काव्य–पाठ भी प्रस्तुत किया जाएगा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कई प्रकाशनों का लोकार्पण भी किया जाएगा, जिनमें प्रमुख रूप से दीक्षांत स्मारिका, वार्षिक प्रगति आख्या, तथा विश्वविद्यालय का समाचार बुलेटिन 'कैंपस कनेक्ट' शामिल हैं।

कुलपति ने बताया कि नवम् दीक्षांत के अवसर पर 48 गोल्ड मेडल प्रदान किए जाएंगे जिसमें 37 स्वर्ण पदक राज्यपाल पदक के रूप में होंगे तथा अन्य 11 स्वर्ण पदक अक्षय निधि पदक के रूप में सम्मिलित हैं। इसी प्रकार पीएच.डी. उपाधि प्राप्त करने वाले 32 शोधार्थियों को डिग्री प्रदान की जाएगी जिसमें 23 छात्र और 9 छात्राएं सम्मिलित हैं। कुलपति ने

यह भी बताया कि इस बार स्नातक एवं स्नातकोत्तर की भी उपाधियाँ पूर्व वर्ष की भांति डिजिलॉकर के माध्यम से कुलाधिपति द्वारा निर्गत की जाएगी।

स्नातक स्तर पर 4,452 उपाधियाँ डिजिलॉकर पर अपलोड की जाएंगी, जिनके प्राप्तकर्ता 17,583 छात्र तथा 26,469 छात्राएं हैं। इसी प्रकार परास्नातक स्तर पर 9,934 उपाधियाँ प्रदान की जाएगी जिसमें 2,721 छात्र और 7,213 छात्राएं सम्मिलित हैं।

कुलपति ने बताया कि माननीय कुलाधिपति अगले दिन विश्वविद्यालय के शिक्षकों के साथ समीक्षा बैठक भी करेंगी। आँगनवाड़ी कार्यक्रम की रूपरेखा और प्रगति को देखते हुए उनकी शासन एवं आँगनवाड़ी विभाग के साथ बैठकें भी प्रस्तावित हैं। कुलपति ने कहा कि नवम दीक्षांत समारोह में अनेक विशिष्ट अतिथियों, राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, पूर्व कुलपतियों, जनप्रतिनिधियों तथा गणमान्य नागरिकों को आमंत्रित किया गया है। विश्वविद्यालय परिवार सभी अतिथियों के स्वागत हेतु पूर्णतः तैयार है।

प्रेस वार्ता में कुलसचिव दीनानाथ यादव, वित्त अधिकारी रवींद्र कुमार मौर्य तथा अधिष्ठाता वाणिज्य संकाय प्रो. सौरभ, अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. नीता यादव, अधिष्ठाता विज्ञान संकाय प्रो. प्रकृति राय, कुलानुशासक प्रो. दीपक बाबू, 'कैंपस कनेक्ट' के संपादक एवं हिंदी विभाग के आचार्य प्रो. हरीश कुमार शर्मा, मीडिया एवं जनसंपर्क अधिकारी डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, तथा डॉ. धर्मेंद्र एवं डॉ. मयंक उपस्थित रहे।

कुलपति ने परिसर का निरीक्षण कर की नवम् दीक्षांत समारोह की तैयारियों की समीक्षा

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में 10 नवंबर को आयोजित होने वाले नवम् दीक्षांत समारोह के सफल, सुव्यवस्थित एवं गरिमामयी आयोजन के लिए कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने आज संपूर्ण विश्वविद्यालय परिसर का विस्तृत निरीक्षण किया।

निरीक्षण की शुरुआत कुलपति ने अतिथियों के विश्रामस्थल से की, जहाँ उन्होंने राज्यपाल एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों के ठहरने की व्यवस्थाओं की बारीकी से समीक्षा की। उन्होंने सुरक्षा, नागरिक सुविधाओं, स्वच्छता और स्वागत व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने के निर्देश दिए।

इसके बाद कुलपति ने मुख्य कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया। पंडाल व्यवस्था, मंच, तकनीकी प्रबंधन, बैठने की व्यवस्था, विद्युत एवं ध्वनि सिस्टम, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति हेतु मंच आदि का परीक्षण करते हुए आवश्यक सुधार संबंधी निर्देश दिए गए। कुलपति ने छात्रावासों का भी निरीक्षण किया तथा साफ–सफाई, पेयजल, स्वच्छ शौचालय और सुरक्षा व्यवस्था को और सुदृढ़ करने के लिए संबंधित अधिकारियों को दिशा–निर्देश प्रदान किए।

इसके उपरांत उन्होंने चंदन वाटिका, पदमा सरोवर, एवं ओपन जिम का भी अवलोकन किया, जिनका लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान माननीय कुलाधिपति द्वारा किया जाएगा। उन्होंने परिसर की सौंदर्य–वृद्धि, उद्यान व्यवस्था तथा आगंतुकों के मार्गदर्शन हेतु संकेतक पट्टिकाओं का समुचित प्रबंधन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। कुलपति ने विज्ञान संकाय, मुख्य प्रवेश द्वार, प्रशासनिक भवन, पुस्तकालय परिसर सहित पूरे विश्वविद्यालय परिसर में भ्रमण कर तैयारियों की समीक्षा की। सभी संबद्ध अधिकारियों को समय–बाउंड कार्य पूर्ण करने, स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने, और सुरक्षा प्रबंधन को सुदृढ़ करने के निर्देश दिए गए।

कुलपति ने कहा कि नवम् दीक्षांत समारोह विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा का प्रतीक है और इस अवसर पर किसी भी प्रकार की कमी नहीं रहने दी जाएगी। उन्होंने आयोजन समिति, अनुशासन समिति, स्वागत समिति, सुरक्षा समिति तथा अन्य सभी विभागीय टीमों को समन्वयपूर्ण कार्य करने का निर्देश दिया।

बुद्ध–प्रसंग

एक बार भगवान् बुद्ध नगर के बाहर एक विशाल उद्यान में ठहरे। उनके दर्शन के लिए छोटे–बड़े, स्त्री–पुरुष, धनी–गरीब सब जाते थे। एक दिन प्रातःकाल राजा अकेला ही पैदल जा रहा था। उधर से एक अन्य धनी व्यापारी भी जा रहा था।

उन लोगों को रास्ते में एक माली मिला। माली के हाथ में एक सुन्दर सुगन्धित कमल था। शरद् ऋतु समाप्त हो गई थी और शिशिर ऋतु प्रारम्भ हो गई थी। कमल मिलना कठिन हो गया था। राजा और साहूकार दोनों को लगा कि उस कमल को खरीदकर उसे बुद्ध भगवान् के चरणों में चढ़ायें। साहूकार माली से बोला, ''माली भाई, फूल कितने का है?''

माली बोला, ''चार पैसे में।''

राजा बोला, ''मैं दो आने देता हूँ, मुझे दे दो।''

साहूकार बोला, ''माली भाई, में चार आने देता हूँ, मुझे दे।''

राजा बोला, ''मैं आठ आने देता हूँ।''

साहूकार बोला, ''मैं रुपया देता हूँ।''

इस पर कमल की कीमत बढने लगी। माली ने मन में कहा, 'ये लोग जिसके पास कमल ले जा रहे हैं यदि उसके पास मैं ही कमल ले जाऊँ तो मुझे भी ज्यादा कीमत मिलेगी।' इस विचार से वह माली बोला, ''मैं किसी को भी न दूँगा। आप लोग जाइये।''

राजा और साहूकार जाने लगे। माली भी उनके पीछे–पीछे चला। भगवान् बुद्ध एक शिलाखण्ड पर बैठे थे। हजारों लोग उनका उपदेश सुन रहे थे। राजा ने वन्दन किया और वह शान्तिपूर्वक दूर जाकर बैठ गया। साहूकार ने प्रणाम किया और वह भी दूर जाकर बैठ गया। उसके पीछे वह माली भी था। भगवान् बुद्ध के चरणों में कमल रखकर वह भी नम्रतापूर्वक दूर जाकर बैठ गया।

भगवान् बुद्ध को देखते ही पैसों का स्वार्थी विचार माली के मन में आया ही नहीं। उस पवित्र मूर्ति के सामने पवित्र विचारों से ही उसका हृदय भर गया। उस वातावरण में स्वार्थी विचार क्षणभर के लिए भी जीवित नहीं रह सकते थे।

(सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित साने गुरुजी की पुस्तक 'भारतीय संस्कृति' से साभार; पृ. 121–22)

अमृत–पुत्र

(लघुकथा)

–प्रो. सत्येन्द्र कुमार दुबे

खेत की बुआई हो गयी। धरती की कोख में पल रहा दाना अंकुरित होने को हुआ। धरती प्रसूता बनी और दाना अंकुरित हुआ। माँ की कोख से निकलकर अब दाना माँ की गोंद में पलने लगा। धीरे–धीरे ऊपर उठता हुआ दुधमुहाँ अंकुर बड़ा होने लगा और फिर कुछ दिनों बाद वह माँ की गोंद से बाहर निकलकर मुक्त आकाश में अठखेलियाँ करता रहा। एक दिन किसान खेत में खाद डालने आये, तो शिशु पादप ने माँ से पूछा, ''माँ ये कौन है?'' माँ ने कहा– ''बेटा! ये हलधर हैं।'' शिशु ने फिर पूछा– ''क्या ये ही पिता हैं?'' माँ ने मुस्करा कर कहा– ''नहीं, ये अन्नदाता हैं। ये प्राणियों के पालक हैं।'' कुछ दिनों बाद बरसात हो रही थी, तो शिशु ने माँ से पूछा– ''माँ ये कौन हैं? क्या ये ही पिता हैं?'' माँ ने मुस्करा कर कहा– ''नहीं, ये जलधर हैं। ये हमारी सहायता करते हैं और हम हलधर की तथा हलधर समस्त प्राणियों की सहायता करते हैं।''

इसी तरह बोलते–बतियाते, खेलते–झूमते कुछ दिन बीतते गये। शिशु अब प्रौढ़ हो चला था। धीरे–धीरे खेत में प्रौढ़ पौधों की फसल लहलहाने लगी थी। पौधे आनन्दित थे। वे चाँदनी रात में ज्योत्स्ना में डुबकियाँ लगाते, तारों से बातें करते। प्रात की रवि–रश्मियाँ उन्हें जगातीं, हवायें झूला झुलातीं, दोपहर को भगवान भास्कर भरपेट भोजन कराते। सायंकाल हवाओं के साथ वे खेलते–मचलते फिर माँ के संग बातें करते।

खेत की फसल पक गयी। फसल को मजदूर काटने आये, तो सारे पौधे भयभीत हो गये और भयाक्रांत होकर समवेत स्वर में माँ को पुकार उठे– ''माँ! अब क्या होगा? अब तो हम सब मारे जाएंगे।'' माँ ने कहा– ''भयभीत न हो पुत्रों! तुम सब अमृत–पुत्र हो।'' तभी मजदूरों ने फसल में हँसिया लगाया और पौधों से कुछ दाने छिटक कर धरती पर गिर पड़े। गिरते ही दाने चीख पड़े– ''हाय माँ! हम मर जाएंगे।'' नीचे गिरे हुए दानों के मुख चूमती तथा खड़े पौधों को सस्नेह सहलाती हुई माँ ने कहा– भयभीत न हो पुत्रों! इसी तरह गिरना फिर खड़े होना हमारा धर्म है। माँ मृदा की गोंद, तुम्हारा अंकुरण और बड़ा होना, बार–बार गिरना–खड़ा होना, स्वयं का विकास करके विश्व–कल्याण के लिए निचुड़ जाना यही तो मर्म है। हम अपनी इसी गति से जगत का पालन–पोषण करते हैं। हे पुत्रों! हम जीवनदाता हैं। हम सनातन

धर्म अमृत–पुत्र हैं, हम नहीं मरते, हम अपनी पीढ़ियों मे जीवित रहते हैं और सदैव जीवित रहेंगे।

अध्यक्ष–हिन्दी विभाग
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु

संस्कार कभी नहीं डूबते

–अंजना संधीर

लोगों से भरी खचाखच
लोकल ट्रेन में
कमर पर बैग लटकाए
एक हाथ से ट्रेन का हैंडल थामे
कानों में फैशन से टॉप्स पहने
साँवले–से चेहरेवाले युवक ने दूसरे हाथ से
एक छोटी–सी पुस्तक को माथे पर लगा
नमस्कार कर आँखें बंद कीं
फिर खोलकर पन्ना पढ़ने लगा
तब मेरी आँखें आश्चर्य से खुली की खुली रह गईं
इस भीड़ भरी ट्रेन में
यह युवक दुर्गा सप्तसदी पढ़ रहा था...
जगमगाहट और जादू भरी इस नगरी में
जहाँ ईमान डोल जाता है वृद्धों का भी
वहाँ यह युवक पढ़ रहा था दुर्गा सप्तसदी।
सिर अभिमान से तन गया मेरा
और पूछा मैंने–तुम भारत में
कहाँ से हो ?
उसने अनसुना किया
मैंने सोचा– ''पाठ में मशगूल है।''
ट्रेन चलती रही, मुसाफिर उतरते रहे, चढ़ते रहे
वो पढ़ता रहा।
एक बार फिर पूछा मैंने
उसने पलटकर देखा, बोला कुछ भी नहीं
मन दुखी हुआ मगर उसके अच्छे कर्म ने
फिर झकझोरा–अंग्रेजी में पूछा मैंने, ''क्या तुम भारत से हो?''
बड़ी शालीनता से हँसते हुए उसने देखा
और कहा–जी नहीं, त्रिनीडाड से, हिन्दी नहीं आती मुझे
अंग्रेजी शब्दों में लिखी दुर्गा सप्तसदी पढ़ रहा हूँ

दिन सुधर जाता है
मेरा धर्म मुझे बताता है
मैं एक हिन्दू हूँ
छुट गया हूँ अपने वंशजों से
पर उनका ज्ञान, ध्यान, शब्द, उपासना अब भी मेरे साथ हैं
जो दिए हैं मेरे पितरों ने और इसी तरह मैं दूँगा
अपनी पीढ़ी को
इसी तरह चलती रहेगी यात्रा पीढ़ियों से पीढ़ियों की ओर
बयालीसवीं गली के स्टेशन पर
दो हाथ–जोड़, प्रणाम कह
ट्रेन से उतर गया वो युवक
अमरीका की चमक–दमक में भी
वो गिरमिटिया मजदूर
पढ़ता है दुर्गा सप्तसदी
दिन शुरू करने से पहले
इसीलिए जिन्दा है आदमी
कहीं भी रहता है
उसके संस्कार रखते हैं उसे जिन्दा
सब कुछ डूब भी जाता है तो भी
संस्कार कभी नहीं डूबते।

प्रवासी साहित्यकार (अमेरिका)

(वर्तमान साहित्य के प्रवासी महाविशेषांक (मई, 2006) से साभार)

मेरी माँ जानती है

–तारो सिन्दिक

मेरी माँ
शब्दों के आगे अन्धी हो जाती है
लेकिन उन काले अक्षरों के बीच
छिपे उज्ज्वल कल को
मेरी माँ जानती है।

मेरी माँ
विधवाओं की उन कतारों में से एक है
जिनके लिए समस्त संसार
बिना दरवाजे का आजाद कालापानी है
लेकिन लीक से हटकर चलना
मेरी माँ जानती है।

मेरी माँ
बच्चों की हल्की चोट से घायल हो जाती है
लेकिन परम्परा की हर रणभूमि में
अस्त्र–शस्त्रों की फसल उगाना
मेरी माँ जानती है।

मेरी माँ
फूल होकर भी पत्थर है अब।
कोमलता को उसकी उम्रकैद की सजा मिली है
लेकिन फूल और पत्थर के दरमियाँ बीते इतिहास को
मेरी माँ जानती है।

मेरी माँ
वो पतंग है जिसकी डोर टूट चुकी है
लेकिन माँ से बाप बनना
मेरी माँ जानती है।

मेरी माँ
सभ्यता के चरमोत्कर्ष युग में रहकर भी
किताबों की दुनिया में अजनबी है
लेकिन जिन्दगी कैसे पढ़ी जाती है
मेरी माँ जानती है।

(प्रसिद्ध अरुणाचली कवि)
डी. एन. गव. कॉलेज, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश

विकास के शोर में पहाड़ की खामोशी

–वेद प्रकाश

अरावली बोली –
"मैं केवल पत्थर नहीं, मैं काल हूँ,
मैं युगों की गवाह, मैं जीवन की ढाल हूँ।
तपती लू को रोककर शहर को ठंडक देती,
मैं तुम्हारी साँसों का, पानी का, कल का सवाल हूँ।
क्या तुम भूल गए?
मैं तुम्हारी नींव हूँ, समझो या न समझो।"
इंसान हँसा (अहंकार में)–
"तुम पुरातन हो, हम आधुनिक,
तुम्हारे जंगल, हमारे कंक्रीट में बाधक।
तुम्हारी हवाएँ ए. सी. की ठंडक से कमतर,
तुम्हारा होना, हमारे मुनाफे में अड़चन।"
फिर मशीनों की फौज उतरी –
चोटियों की पसलियाँ चटकीं,
हरियाली को 'प्लॉट' और 'जोन' में बाँट दिया गया।
ट्रकों में भरकर ले जाई गई पहाडियाँ,
कंटेनरों में बंद वह प्राचीन चट्टान,
सेंसेक्स और मुनाफे के चार्ट में बदल गई।
प्रकृति चीखी, पर पहाड़ मौन रहा –
"धैर्य रखो, मैं अपना अपमान भी सहूँगा।"
तब मिट्टी सिसक उठी–
"देखो, अब मैं खेतों में नहीं, सड़कों पर बह रही हूँ,
तुम्हारे ड्राइंग रूम की धूल बनकर रह रही हूँ।"
तब बाजारवाद फुसफुसाया,
"मैं ही अब नया भगवान हूँ।
मिट्टी बिकाऊ है, पानी 'प्रीमियम' है,
शुद्ध हवा अब एक महँगा विज्ञापन है।
प्रकृति माँ नहीं, बस एक संसाधन है।"
विकास ने उद्घोष किया –

"मैं ही सभ्यता हूँ।
जहरीली हवा और दूषित जल तो बस एक कीमत है,
जिसे चुकाना तुम्हारी नियति है।
बाकी सब मार्केटिंग का भ्रम है।"
और अंत में...
वे बच्चे, जो कभी मिट्टी में सना करते थे,
अब मास्क पहनकर धूल में दौड़ते हैं।
उनकी हँसी कॉर्पोरेट बोर्ड में नीलाम होती है।
इंसान आज भी मुगालते में है –
"हमने पहाड़ जीत लिया।"
पर अरावली अब सिर्फ नक्शों पर एक लकीर है,
और उस लकीर के नीचे लिखा है–
'विकास और विनाश का संतुलन'।
हवा ने अपना फैसला सुना दिया है–
"तुम्हारा विकास अब केवल धूल है,
तुम्हारी योजनाएँ विष हैं,
और तुम्हारी साँसे?
वो बाजार ने गिरवी रख ली हैं।"

पूर्व छात्र (एम. ए. हिंदी)

आलू लेइगो कि पूड़ी?

(हास्य लोककथा)

एक परिवार में एक दिन मेहमान के रूप में समधी पधारे। गाँव में रहने वाले उस परिवार में पत्नी दबंग थी और पति दब्बू। इतना दब्बू कि बेचारा कभी–कभी पत्नी से पिटायी भी खा जाता। समधी अचानक आ गये। वे जिस दिन घर आये, संयोग से उस दिन घर में कुछ व्यवस्था कम थी। सो पत्नी ने पति को समझाया कि ''देखो, घर में आलू हैं, थोड़ा गेहूँ का आटा और घी भी है। मैं आलू पूड़ी बना दूँगी। समधी भर को तो व्यवस्था जैसे–तैसे हो जायेगी, पर पूरे घर को नही हो पायेगी। सो, तुम समधी के साथ खाने को नहीं बैठना।'' पति ने कहा कि 'अगर समधी ही कहने लगें साथ बैठने को तब?'पत्नी ने उसे मूलमन्त्र दिया कि ''देखो, पहले तो तुम किसी तरह टालना और उसके बाद भी समधी अगर नहीं ही मानें तो उनके साथ खाने को बैठ तो जाना, परन्तु खाना मत। बस खाने का नाम भर करना।'' पति ने आज्ञाकारी बच्चे की तरह हामी भर दी।

भोजन के समय जब समधी को बुलाया गया तो वही हुआ, जिसका पत्नी को डर था। समधी ने साथ खाने का आग्रह किया और पति को उनके साथ बैठना पड़ा। यहाँ तक तो ठीक, परन्तु जब वह भोजन करने लगा तो भोजन के स्वाद में पत्नी की नसीहत को भूल गया। समधी एक खायें, तब तक वह दो खा ले और बार–बार पूड़ी–सब्जी के लिये थाली आगे बढ़ा दे। पत्नी के तो क्रोध की सीमा नहीं। समधी के सामने कह कुछ सकती नहीं। पर अन्दर ही अन्दर उसका खून खौले। राशन इतना भी कम नहीं था। उसकी योजना थी कि समधी के खाने के बाद जो पूड़ी–सब्जी बचेगी, उसे वह और बच्चे खा लेंगे। आदमी के लिये दोपहर की रखी रोटियाँ हो जायेंगी। पर यह आदमी तो सारी योजना ही चौपट करने में लगा है।

उसने संकेतों से ही आदमी को रोकने का प्रयत्न भी किया। घूँघट में से ही आँखें भी तरेरीं, चिमटा भी दिखाया, बेलन भी दिखाया; पर आदमी पर कोई असर नहीं। उसने मन में कहा– 'अब खा रहा हूँ तो खा ही लूँ। फिर पता नहीं ऐसा अवसर कब हाथ आये। अब बाद में तो जो होगा सो देखा ही जायेगा।'

भोजन करके जब समधी उठ गये तो उसने अपने आदमी को बुलाया और कहा कि ''आज पड़ोस में गीत हो रहे हैं। मुझे वहाँ जाना है। घर में बच्चे अकेले रह जायेंगे। इसलिये तुम समधी के पास न सोना। यहाँ भीतर बच्चों के साथ सो जाना।'' उसने इस पर भी हामी भर ली। उसे तो पता थी अपनी पत्नी की चाल कि वह उधार नहीं रखना चाहती, आज का हिसाब आज ही बराबर करना चाहती है। वह भी कम चालाक नहीं था। सो, जब पत्नी घर से वाहर चली गयी तो वह भी वहाँ से उठा और समधी के पास जा पहुँचा। उनसे कहा कि 'ऐसा है समधी! पत्नी पड़ोस में गीतों में गयी है और मुझे अभी तुरन्त खेत में जाना पड़ेगा। इसलिये थोड़ी देर को तुम भीतर बच्चों के पास लेट जाओ। मैं जब खेत से वापस आ जाऊँगा तब तुम इधर आ जाना।'' समधी को भला क्या दिक्कत हो सकती थी! वे खुशी–खुशी अन्दर लेट गये।

इधर उस महिला को चैन नहीं। बैठी भले गीतों में थी, लेकिन मन तो उसका कहीं और ही था। उसे बार–बार यही मन में आ रहा था कि आखिर उसके आदमी ने उसकी ऐसी अवज्ञा की ही कैसे? उसे सबक सिखाना पड़ेगा तुरन्त। नही तो आगे वह उसके कब्जे से निकल जायेगा। थोड़ी ही देर वह वहाँ बैठ पायी और बच्चे को दूध पिलाने का बहाना बनाकर आगबबूला हालत में घर आ गयी। घर में भीतर पहुँचते ही वह आदमी की छाती पर चढ़कर बैठ गयी और टूट पड़ी। बिना बोले ही पहले तो उसके गालों पर चार–छह तमाचे जड़ दिये। फिर मुँह खोला– ''बोल दाढ़ीजार! आलू लेइगो कि पूड़ी? अब बताउ?''

वहाँ तो समधी! पहले तो यकायक उनकी कुछ समझ में ही नहीं आया कि हुआ क्या! फिर जब बह बोली तो उन्होंने पहचाना और कातर भाव से कहा कि 'अरे समधिन माफ कर दो। मुझे नहीं पता कि आलू–पूड़ी की यह कीमत है। सुबह मैं तुम्हारे आलू–पूड़ी के पैसे दे दूँगा और फिर कभी नहीं आऊँगा। अभी मुझे छोड़ दो!''

जैसे ही उसने समधी की आवाज सुनी, वह छोड़कर भागी मन में पानी–पानी होती हुई कि 'अरे दैया रे! जे तौ समधी हैं। जौ नासरोओ है बहुत चालू। जाने समधी पिटवाय दै।''

खैर! बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी! फिर से गीतों में पहुँचकर उसने हिसाब लगाया कि समधी अगर वहाँ तो फिर उसका पति कहाँ? और फिर जब यह पहेली उसके मन में सुलझी कि पति समधी की जगह लेटा है तो उसकी बेचैनी का ठिकाना न रहा। किसी बहाने से वह थोड़ी देर बाद फिर उठी और अबकी सीधे दालान पर आयी, जहाँ समधी की जगह उसका आदमी चालाकी से लेटा था।

और उधर उसके पति ने जब देखा कि काण्ड हो गया! वह तो असल में सोया ही नहीं था। उसे तो पता ही था कि क्या होने वाला है समधी के साथ! पर, यह एक अवसर मिला था उसे। वह अपनी पत्नी को इतना शर्मसार कर देना चाहता था कि हमेशा–हमेशा के लिये उसका संकट समाप्त हो जाये। अतः वह गया भीतर समधी के पास और कहा कि मैं अब आ गया हूँ। अब तुम चाहो तो बाहर सो जाओ। समधी दूध के जले बैठे ही थे। कहें तो क्या ही और कैसे? तुरन्त चुपचाप बाहर आकर लेट गये। सो, फिर जब गृहस्वामिनी आयी तो वही फँसे। फिर वही प्रक्रिया। अबकी उसका गुस्सा और बढ़ा हुआ था– सातवें आसमान तक। अतः उसी अनुपात में तमाचों का जोर भी स्वाभाविक रूप से अधिक था। समधी बिलबिलाये। पैरों में गिर गये– ''अब क्या इस गलती के लिये मार ही डालोगी समधिन। सुबह तो होने दो। मैं तुम्हारा आलू–पूड़ी का पूरा पैसा चुकाकर जाऊँगा। किसी तरह जान बख्श दो!''

(प्रस्तुति–हरीशकुमार शर्मा)

भगवान बुद्ध : अंतिम समय और बीमारी

अपने जीवन के अंतिम दिनों तक बुद्ध अपनी विहार–यात्रा और उपदेशों के कार्यक्रम का पूरा निर्वाह करते रहे। अपने 79वें वर्ष में वे राजगृह में थे और वहाँ से अंबलट्ठिका, नालंदा होते हुए पाटलिग्राम को चले जहाँ अजातशत्रु गंगा के उस पार लिच्छवियों को जीतने के विचार से एक दुर्ग की नींव रख रहा था। यहाँ बुद्ध ने भविष्यवाणी की, ''जहाँ तक आर्यजनों का आयतन है, जहाँ तक वणिक–पंथों का विस्तार है, यह पाटलिपुत्र सबमें अग्र नगर होगा'' (महापरिनिब्बान सत्त)। इसके बाद वे नगर के बाहर एक द्वार से होकर निकले जिसका नाम गौतम द्वार रखा गया और गौतमतित्थ नामक घाट पर गंगा पार करके वैशाली पहुँचे। वहाँ पास के वलुगाम में वे कठिन रोग से पीड़ित हुए और भविष्यवाणी के रूप में बोले ''आज से तीन महीने बाद तथागत का अंत हो जाएगा।'' वैशाली से चलकर भंडगाम, हत्थिगाम, अंबगाम, जंबुगाम और भोजनगर होते हुए पावा आए और वहाँ चुंद कम्मारपुत्त (लुहार) के अंबवन में ठहरे। वहाँ चुंद ने अनेक प्रकार की खाद्य भोजनीय सामग्री तैयार कराकर बहुत–सा सूकरमद्दव भी भगवान के सामने रखा, वही उनका अंतिम भोजन हुआ। भगवान ने कहा, ''हे चुंद ! सूकरमद्दव मुझे परोसो और खादनाय भोजनीय सामग्री भिक्षु–संघ को दो !'' प्राचीन टीकाकारों के अनुसार सूकरमद्दव सूअर का मुलायम स्नेह मिला हुआ मांस था, पर अन्य के अनुसार वह एक प्रकार की वनस्पति थी, जिसे सूअर खोदकर खाते हैं या छत्रक (कुकुरमुत्ता) का नाम था जो सूअरों की माँद के पास उगता था या कोई उपसेचन (भोजन में स्वाद उत्पन्न करने के लिए मिलाया जाने वाला) पदार्थ था (उदान अट्ठकथा 1/399)। भोजन के बाद बुद्ध के पेट में कड़ी पीड़ा होने लगी, रक्त के दस्त होने लगे और उन्हें मरणांतक वेदना सताने लगी। उसे सहन कर वे कुसिनारा की ओर चले ।

पावा से कुसिनारा : मार्ग में एक वृक्ष के नीचे रुककर उन्होंने आनंद से कहा– ''आनंद, इस संघाटी की चार तह करके बिछाओ, मैं थक गया हूँ, बैठूँगा। आनंद, मेरे लिए पास की ककुत्था नदी से पानी ले आओ, मैं प्यासा हूँ, पिऊँगा।'' उसी समय 500 शकटों ने नदी पार करके उसके पानी को गंदला और मैला कर दिया था। आनंद कुछ देर करके नदी पर गए; तब तक पानी निथर गया था। यहाँ मल्लपुत्त पुक्कुस, जो आलार कालाम का शिष्य था, उनसे मिलने आया और उनका शिष्य हो गया। उनको बुद्ध ने यह कथा सुनाई– ''हे पुक्कुस, एक बार मैं आतुमा ग्राम में विहार कर रहा था, उस समय मेंह बरसने लगा, बादल गड़गड़ाने लगे और बिजली चमकने लगी। बिजली गिरने से कई किसान और बैल मर गए। लोगों की भीड़ इकट्ठी हो

गई, पर मुझे किसी चीज का भी भान न हुआ; इस प्रकार की मेरी समाधि थी।''

नदी में स्नान करके बुद्ध ने एक अंबबन में फिर विश्राम किया और सोचा कि उनका अंत होने पर कहीं लोग चुंद को दोष न दें कि उसने ही रोग उत्पन्न करने वाला भोजन बुद्ध को खिला दिया; अतएव उन्होंने आनंद से कहा कि चुंद का दिया हुआ भोजन ही तथागत के भौतिक शरीर का अंतिम भोजन होना निश्चित था, और उससे उन्हें कष्ट का विपाक भी मिलना था।

अंतिम शब्द : बुद्ध उठे और हिरञ्ञवती नदी पार करके कुसिनारा पहुँचे जहाँ मल्लों के सालवन में उन्होंने अंतिम विश्राम किया। उन्होंने कहा, ''आनंद, आओ, मेरे लिए उत्तर की ओर सिर करके मंच तैयार करो. मैं क्लांत हूँ, लेटूँगा।'' भिक्षु उपवाण उन्हें पंखा झलने लगे। तब बुद्ध ने आनंद से कहा कि जाकर कुसिनारा के मल्लों को हमारे अंत समय की सूचना दे दो। उसे सुनकर मल्ल अपने स्त्री–पुत्रों सहित ठट्ठ–के–ठट्ठ सालवन में जमा हो गए और आनंद ने एक–एक व्यक्ति का परिचय न कराकर एक–एक कुल का परिचय कराया, क्योंकि वे बहुत थे। इसी बीच कुसिनारा के परिव्राजक सुभद्द ने बुद्ध से दीक्षा लेकर अंतिम उपदेश ग्रहण किया। तब बुद्ध ने उपस्थित भिक्षुओं से कहा, ''हो सकता है भिक्खुओ, किसी भिक्खु के मन में कोई शंका या संदेह रह गया हो। भिक्खुओ, उसे पूछ लो; किसी के मन में पीछे ऐसा न हो कि हम शास्ता के रहते न पूछ सके।'' ऐसा कहने पर सब भिक्षु चुप रहे। दूसरी बार फिर, तीसरी बार फिर भी पूछा, और तब अंतिम बार बोले, ''हे भिक्खुओ, इस समय आज तुमसे इतना ही कहता हूँ, जितने संस्कार (संयोजित पदार्थ) हैं, सब नाश होने वाले हैं; प्रमाद–रहित होकर अपना–अपना कल्याण करो (हदं दानि भिक्खवे, आमंतयामि वो, वयधम्मा संखारा, अप्पमादेन, सम्पादेथा ति)।''

पुरातत्त्व की खुदाई में कुछ ऐसे स्तूप मिले हैं जिनमें बुद्ध के अवशेष प्राप्त हुए हैं जिससे ग्रंथों में वर्णित बातों की सत्यता सूचित होती है। 1898 ई. में पिपी साहब ने नेपाल की सीमा के समीप पिपरहवा ग्राम के स्तूप की खुदाई की, और उसके भीतर पत्थर की मंजूषा में रखी हुई कई छोटी मंजूषाएँ प्राप्त कीं जिनमें रत्न–पुष्प आदि के अतिरिक्त कुछ फूल या अस्थियाँ भी थीं। और उससे भी रोचक बात यह है कि पत्थर की एक मंजूषा के ढक्कन के किनारे के चारों ओर अशोककालीन ब्राह्मी लिपि में यह लेख लिखा था, ''सुकिति भतिनंसभ्यता सभगिनिकनं सप्तदलनं इयं सलिल–निधन बुधस भगवते सकियनं' = भगवान बुद्ध की शरीर–धातुओं का यह निधान सकृक्ति (सुंदर कीर्ति) शाक्यों के भ्राता भगिनिपुत्र और स्त्रियों के द्वारा स्थापित किया गया; जिसका अर्थ है कि वह स्तूप समस्त शाक्य संघ के स्त्री–पुरुष और बालकों की ओर से बुद्ध के पवित्र अवशेषों पर बनाया गया था।

अंतिम दृश्य : उपस्थित भिक्षुओं में अनुरुद्ध भी थे, जो विलाप करते हुए समुदाय को सांत्वना देने लगे । महाकस्सप पावा से अपने भिक्षु संघ के साथ आ रहे थे, मार्ग में एक आजीविक भिक्षु से उन्होंने बुद्ध की मृत्यु का समाचार सुना ।

मल्ल लोग गंधमाला, संगीत और वस्त्रों के साथ भगवान् के शरीर के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए आए। चितादाह के बाद उन्होंने फूलों पर सुगंधित जल छिड़का और एक सप्ताह तक अपने संघागार में धनुषों का प्राकार और शक्तियों का पंजर रचकर उनके मध्य में भगवान की शरीर–धातुओं को रखा।

तब भगवान की शरीर–धातुओं का भाग लेने के लिए आठ दावेदार आए और प्रत्येक ने उन पर स्तूप रचने की बात कही।

(राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित राधाकुमुद मुखर्जी की पुस्तक 'हिन्दू सभ्यता' से साभार; पृ. 254–55)

पूर्व और नूतन

–डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल

कुछ व्यक्ति नए के प्रति आस्थावान होते हैं और कुछ पुराने के लिए श्रद्धा रखते हैं। मनुष्य–जीवन में नया और पुराना, इन दोनों का ही एक विचित्र समन्वय है। हमारे अनुभव के क्षेत्र में पूर्व–काल और नूतन–काल दोनों को ही हिस्सा मिला है। जिस समय कोई व्यक्ति या समाज अपने आपको मन की उस दशा में डाल लेता है, जिसमें नए व पुराने, दोनों के लिए भरपूर श्रद्धांजलि भेंट करने की उसकी क्षमता नष्ट हो जाती है। उस समय या तो आगे के लिए उसकी गति रुँध जाती है या उसकी प्रगति बहुत ही डाँवाँडोल होकर दिक्भ्रम में पड़ जाती है। जो कुछ पुराना है, न तो वह सब बहुत बढ़िया है और न जो नया है, वह पुराने के सिर पर पैर रखकर जीने का अधिकारी है। हमारी संस्कृति के प्रभातकाल में ही उसके प्रवर्तकों ने नए व पुराने के समन्वय को अच्छी तरह समझ लिया था। ऋग्वेद के एक मंत्र में यह भाव बहुत ही काव्यमय ढंग से व्यक्त किया गया है–

'अग्निः पूर्वेभिः ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।'

अर्थात् पूर्व और नूतन दोनों युगों के ऋषियों ने अग्नि की पूजा व उपासना की है। समान रूप से अग्नि उनके द्वारा स्तुति के योग्य है। मंत्र का अग्नि शब्द सांकेतिक रूप से किसी मूल्यवान् तत्त्व की ओर हमारा ध्यान खींचता है। एक ओर यज्ञ की वेदी में प्रज्वलित जो भौतिक अग्नि है, वह भी मंत्रार्थ का विषय है; किंतु वेदों में समाधि भाषा के अनुसार जो मनोमय, प्राणमय एवं ज्ञानात्मक जगत् है, वह सब ही अग्नि शब्द के अंतर्गत है। प्राण की पंचाग्नियाँ प्रत्येक शरीर में जैसे आज प्रज्वलित हैं, वैसे ही हजारों–लाखों वर्ष पूर्व भी प्राणियों की देह को संचालित करती थीं। प्राणाग्नियों की कृपा से यह मनुष्य–शरीर सनाथ और पूजा के योग्य बना है। प्राणाग्नि के वियोग से मनुष्य की प्रियतम देह भी मिट्टी हो जाती है। पूर्व व नूतन दोनों ऋषियों ने ही प्राणों की उपासना के लिए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। जब पुराणवादी लोग प्राणाग्नि की साक्षात् उपासना भूल जाते हैं, उस समय प्राचीनता के पाश में जकड़ा हुआ जीवन चैतन्य का स्पर्श खो देता है और नवीन प्रवाह के अभाव में निष्प्राण होने लगता है। नदियों का जल पर्वतीय उद्गम से पोषित होकर भी नित्य आगे बढ़ने के लिए मार्ग ढूँढ़ता है। जहाँ आगे के प्रवाह में टोटा पड़ा, वहीं ठहरा हुआ जल सड़ने लगता है। पुराण के भीतर बहुत बड़ा आकर्षण और उपयोगिता छिपी रहती है, किंतु यदि पुराण को नूतन का आश्रय नहीं मिलता तो पुराण का तेज भी लुप्त हो जाता है और उसकी जीवन–शक्ति कुंठित हो जाती है। वंश की परंपरा में हम नित्यप्रति देखते हैं कि किस प्रकार पुराण वृद्ध नूतन बाल के रूप में जन्म लेता और उसको उँगली का सहारा देकर आगे बढ़ता है। वैदिक मंत्रों में बहुत ही सरसतापूर्ण और साहित्यिक ढँग से वृद्ध और बाल के इन सनातन संबंध को व्यक्त किया है। बालक क्या है, इस प्रश्न का उत्तर सूत्र–रूप में यह है–

'स पितुः पिता सत्'

अर्थात् प्रत्येक बालक उस पिता का भी पिता है, जिसने उसे जन्म दिया है। जिन लोगों ने इस प्रकार का विचार प्रथम बार प्रकट किया, उनके उदार चिंतन और अतुल साहस की प्रशंसा करनी पड़ती है। प्रत्येक नवजात शिशु में आगे आनेवाला संस्कृति–चक्र पूर्ण रूप से गर्भित है। बालक को प्राण के क्षेत्र में प्रकृति का नितांत नवीन प्रयोग कह सकते हैं; किंतु पुरातन की समस्त थाती को लेकर ही वह नए प्रयोग के लिए आगे बढ़ता है। व्यक्ति के जीवन में बाल्यकाल एक अत्यंत क्रांतिकारी घटना है। वाल्यकाल पुराण का नूतन को महत्त्वपूर्ण वरदान है। बालपन नूतन की साकार मूर्ति है और बुढ़ापा काल के जीर्ण अंश का विकृत रूप। आयु के जीर्ण और मर्त्य अंश से छुटकारा पाने के लिए बालपन की शरण में जाना अत्यंत आवश्यक है। जो समाज अपना कल्याण चाहता है, उसे नित्य नूतन की पुनरावृत्ति करनी चाहिए। जिस समाज के मनोभाव पुराण की जड़ता से ठिठुरे नहीं हैं, वही प्राणों की हलचल और नवीन जीवन का लाभ कर सकता है। अपने आपको नए संस्पर्शों से अवगत एवं परिचित करना ही जीवन का लक्षण है। नवीन के लिए स्वागत का भाव जहाँ विलीन हुआ, वहीं मानव जीवन अस्त हो जाता है। जीवन का रथ–चक्र तो सदा आगे बढ़ने के लिए है, उसे रोकने का प्रयत्न निष्फल होकर रहेगा; अतएव भूत के लिए कल्याणकारी यही है कि वह वर्तमान और भविष्य के साथ मित्रता का नाता जोड़े। पूर्व या प्राचीन के लिए मांगलिक विधान यही है कि वह नित्य नवीन से अपना पोषण करना सीखे। प्रति वसंतकाल में नव–रस का संचार जरठ बने हुए वनस्पति–जगत् को लहलहाता हुआ नवीन जीवन देकर आगे बढ़ाता है और प्रत्येक वृक्ष व लता का पुराना ठाठ आगे आनेवाली फल–फूल–समृद्धि के लिए फिर से तैयार हो जाता है। यही बात तो व्यक्ति और समाज के जीवन में भी घटित होती है।

(प्रभात प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'कला और संस्कृति' से साभार)

चल दिया छोड़कर

चल दिया छोड़कर और इक साल फिर,
हो पुराना चला जो नया था कभी।
हो गयी फिर पुरानी कहानी नयी,
रीति है ये ही, हम जानते हैं सभी।
ये ही दस्तूर है, है रवायत यही,
जो बना आज है, वह मिटा है कभी।
जो नया था कभी, वह पुराना हुआ,
ना दिखा कल वो वैसा, जो देखा अभी।
है पुराने से महिमा नये की सदा,
है पुरातन का भी मूल्य, नव है तभी।

–पराया

विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर
दीक्षांत समारोह
VINOD